अप्रैल १९३९] [वैशाख १९९६

देश-दर्शन

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या २] [वर्ष १

इराक़

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
Single copy As. -/6-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
एक प्रति ।=)

विषय-सूची

स्थान

इराक़ एक बहुत पुराना देश है। यहां कई प्राचीन और सभ्य लोग फले फूले और नष्ट हो गये। इसके उत्तरी भाग में कई सदियों तक एसीरियन सभ्यता रही दक्षिणी भाग में बाबुल की बेबिलोनियन सभ्यता फैली। फिर भी बड़ी लड़ाई के पहले इराक़ तुर्की साम्राज्य का एक पिछड़ा हुआ सूबा था। उस समय इसको अक्सर लोग इसके पुराने यूनानी या ग्रीक नाम (मेसोपोटामिया) से पुकारते थे। मेस का अर्थ है मध्य या बीच। पोटमस ग्रीक भाषा में नदी को कहते हैं। इसलिये मेसोपोटामिया को दो नदियों के बीच का देश कहते हैं। सचमुच इराक़ देश का बहुत बड़ा भाग वहाँ की प्रसिद्ध और बड़ी दजला और फरात नदियों के बीच में स्थित है। लेकिन इस समय वर्तमान इराक़ में द्वाबे के बाहर भी बहुत बड़ा भाग शामिल है। इराक़ का देश पूर्व की ओर ईरान के पठार और उत्तर-पश्चिम में सिरिया और अरब के रेगिस्तान से घिरा हुआ है। दक्षिण में फारस की खाड़ी से उत्तरी सीमा तक इसकी लम्बाई ५०० मील से ऊपर है। इसका क्षेत्रफल हमारे संयुक्तप्रान्त से कुछ अधिक है। लेकिन यहां केवल २८ लाख मनुष्य

रहते हैं जो हमारे प्रान्त में दो-तीन पूर्वी ज़िलों में बसे हुए हैं।

इराक़ और हिन्दुस्तान के बीच में ईरान का सूखा और ऊँचा पठार स्थल मार्गों को कुछ दुर्गम बना देता



१—बसरा के जलमार्ग का एक दृश्य

है। लेकिन कराची और बसरा के बीच समुद्री मार्ग से आना जाना अधिक सुगम है। यदि कोई यात्री कराची में जहाज पर सवार हो तो वह चौथे दिन बसरा (इराक) पहुँच सकता है। डेक का किराया भी ४० रु० के



अन्दर ही है। हवाई जहाज से कुछ ही घंटों में यात्री कराची से बसरा पहुंच सकता है। इराक़ का दक्षिणी भाग उन्हीं अक्षांशों में स्थित है जो पंजाब में होकर जाती हैं। लेकिन इसका उत्तरी सिरा अपने काश्मीर से भी अधिक उत्तर में स्थित है।

इराक़ कैसे एक देश बन गया ?

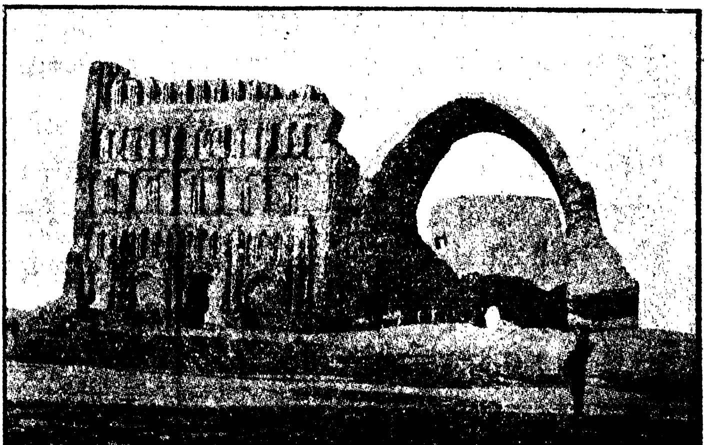
अब से पच्चीस वर्ष पहले इराक कोई अलग देश न था। सारे अरब देश में तुर्कों का राज्य था। इस ओर उन्हीं के राज्य में बसरा, बगदाद और मूसल (मोसूल) नाम की तीन तुर्की विलायतें (कमिश्नरियां) थीं। इस प्रदेश की स्थिति अड़ोस-पड़ोस के देशों में पहुँचने के लिये बड़ी अच्छी है। इसलिये जर्मनी ने तुर्की को मिलाकर फारस की खाड़ी तक बर्लिन-बगदाद नाम की रेल निकालने की योजना तयार की। वे इस स्थल-मार्ग से फौजें भेजकर ब्रिटिश साम्राज्य को छिन्न भिन्न करने के स्वप्न देख रहे थे। तुर्की का सुल्तान सारे मुसलमानों का खलीफा था। इसलिये जर्मनी के कैसर को विश्वास था कि उसके इशारे से सारे मुसलमान टर्की के शत्रु

अँग्रेजों के खिलाफ उठ खड़े होंगे और टर्की का साथ देंगे।

उधर ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थक भी चुपचाप न थे १६१३ ई० में लार्ड किचनर इजिप्ट (मिस्र) देश में ब्रिटिश एजेन्ट थे। वे तुर्की के मातहत (पराधीन) मक्का के अमीर और दूसरे अरबी अमीरों को ब्रिटिश साम्राज्य का मित्र बनाकर तुर्की से विरुद्ध उभाड़ना चाहते थे। दैवयोग से मक्का के अमीर शरीफ हुसेन का दूसरा बेटा अब्दुल्ला अपने छोटे भाई फेसल (जो आगे चलकर इराक का बादशाह हुआ) इधर होकर कुस्तुन्तुनिया की तुर्की राजसभा के अरबी प्रतिनिधि होकर जा रहे थे। लार्ड किचनर उनसे बड़े प्रेम से मिले और उनके पिता को ब्रिटेन की ओर से उस कृपा के लिये धन्यवाद दिया जो वे हिन्दुस्तान से आये हुये हाजी मुसलमान के प्रति दिखलाते रहे। बड़ी लड़ाई छिड़ने पर लार्ड किचनर ब्रिटेन के युद्ध मन्त्री हुए। फिर भी उनकी ओर से चिट्ठियां आती रहीं। उनके एजेन्ट शरीफ हुसेन को अरब की आज़ादी के लिये तुर्की के विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा करने के लिये भड़काते रहे। उन्होंने इस



काम में ब्रिटेन को पूरी मदद देने का बचन दिया। शरीफ हुसेन पहले तो टालता रहा। लेकिन १५ जुलाई १९१५ को उसने अदन को छोड़कर सारे अरब देश की स्वाधीनता स्वीकार करने की शर्त डाली। ब्रिटेन ने इसे



२—टेसीफान का प्रसिद्ध महराब और तख्त-खुसरो के खंडहर

मान लिया। बेचारे शरीफ ने देखा कि उसे ब्रिटेन इतना अधिकार दे रहा है जितना टर्की से कभी न मिलेगा। उसको यह भी विश्वास हो गया कि ब्रिटेन अपना वचन पूरा करेगा। टेसीफान और कूत की हार से ब्रिटेन की

फौजी शान को काफी धक्का पहुँच चुका था। फिर भी शरीफ हुसेन ने ब्रिटेन की ओर से अपने राजनैतिक और धार्मिक स्वामी खलीफा के प्रति विद्रोह का झंडा उठाया।

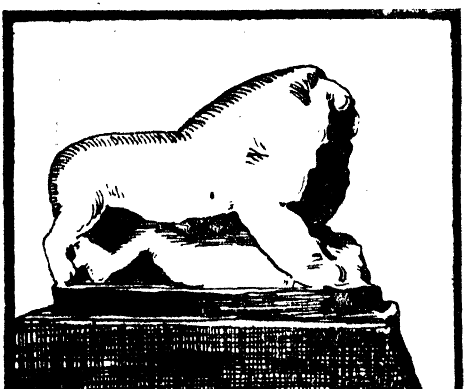
विद्रोह सफल हुआ। इस विद्रोह के कारण तुर्की पूरे ज़ोर से स्वेज़ नहर की ओर नहीं बढ़ सका। पहली हार के बाद दूसरी बार जो अंग्रेजी फौज बग़दाद की ओर पूरी तयारी के साथ बढ़ी उसे सफलता मिली। बगदाद पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। सिरिया और पेलेस्टाइन में भी अंग्रजों की जीत हुई। लड़ाई के अन्त में टर्की की बुरी तरह से हार हुई। लेकिन लड़ाई के बाद अरबों को पूरी आज़ादी कहीं न मिली। अरबों को घोर निराशा हुई। पर अब पछताने से क्या हो सकता था। लीग या राष्ट्र संघ की ओर से इराक में अंग्रजों को शासन करने का अधिकार मिल गया। १६२० ई० में सबसे पहले इराक में विद्रोह उठा। वह दबा दिया गया। लेकिन फिर १६२१ में ब्रिटेन की देखभाल में शाह फैसल इराक का राजा चुना गया। फैसल ने ब्रिटेन के इशारे पर चलने की पूरी कोशिश की। १६३२ में



इराक



लीग के शासन का अन्त हो गया। शाह फैसल के मरने पर १६३३ में उसका बेटा ग़ाज़ी इराक़ की गद्दी पर बैठा। अपने पिता की तरह शाह गाज़ी ने भी ब्रिटेन को खुश रखने की पूरी कोशिश की। इसी अप्रैल (१६३६) में मोटर दुर्घटना से उसका भी देहान्त हो गया। उसका बेटा जिसकी उम्र केवल तीन वर्ष की है इराक़ का राजा बनाया गया। उसका चाचा (ट्रांस जार्डन का) अमीर अब्दुल्ला संरक्षक है।



सूचना

इराक़ देश तीन बड़े भागों में बँटा हुआ है :—(१) नीचा मैदान, (२) ऊंचा भाग और (३) पहाड़ी प्रदेश

नीचा मैदान—फारस की खाड़ी से लगभग ५०० मील ऊपर की ओर इराक का निचला मैदान फैला



३—फलूजा का पुल

हुआ है। इसकी उँचाई सब कहीं समुद्रतल से १५० फुट से नीचे ही है। कहीं कहीं ज़मीन इतनी नीची है कि वहां अक्सर दलदल रहता है। ज़मीन नीची होने पर भी जगह जगह पर रेतीले टीले मिलते हैं जो आने जाने



में बाधा डालते हैं। यह मैदानी भाग दजला और फरात की लाई हुई बारीक कछारी मिट्टी का बना है। इसमें पत्थर का नाम नहीं है। लेकिन इस समय डेल्टा वाले भाग में दोनों नदियों की मिली हुई शत्तल-अरब की संयुक्त धारा और उसकी उपशाखाओं का तल कुछ ऊँचा है। इनके किनारे कुछ ही फुट ऊँचे हैं। जोर की बाढ़ आने पर दूर तक पानी फैल जाता है। दजला नदी में लगभग १५ फुट और फरात में लगभग १४ फुट ऊँची बाढ़ आती है। बाढ़ बसन्त ऋतु के अन्त में आती है जब आर्मेनिया के पठार पर इनके निकास की बरफ पिघलने लगती है।

समतल ज़मीन होने के कारण नदी बड़ी टेढ़ी चाल से बहती है। वह कभी इस किनारे और कभी उस किनारे पर बालू और मिट्टी जमा करती रहती है। बाढ़ के दिनों में पुराने समय की पड़ी हुई नहरों में भी पानी भर जाता है। समुद्र की तरह यहां भी क्षितिज प्रायः सब कहीं एकसा रहता है।

फरात के पड़ोस में सब कहीं रेगिस्तान है। इस लिये इस नदी के मैदानी भाग में कोई सहायक नदी

नहीं मिलती है। दजला में कई छोटी छोटी नदियां इरानी पठार का पानी बहा लाती हैं। दियाला नदी बग़दाद से सात मील दक्षिण की ओर दजला में मिलती है। कारून नदी बसरा के दक्षिण में शत्तल-अरब में



४—बग़दाद के पास मिट्टी निकाल कर एक नहर की सफाई की जा रही है

मिलती है। इस निचले मैदान में साल भर में छः इंच से अधिक वर्षा नहीं होती है। यह सूक्ष्म वर्षा आधे नवम्बर से आधे मार्च तक होती है। गरमी के दिन

एक दम खुश्क रहते हैं। इन दिनों सूर्य निकलते ही छाया में तापक्रम ११० डिग्री फारेनहाइट हो जाता है। दोपहर को अक्सर १२० अंश से अधिक हो जाता है।

ऐसे प्रदेश में बिना सिंचाई के कोई फसल नहीं

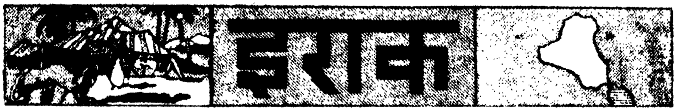


४—नाव चलाने का ढंग

उग सकती है। इस प्रदेश में सिंचाई के तीन ढंग हैं। कुछ भागों में पम्प और ढेंकली द्वारा पानी खींच कर सिंचाई होती है। कहीं कहीं पर बसन्त ऋतु में बाढ़ आने पर खेत इस प्रकार सींच लिये जाते हैं कि उन से

गरमी की ऋतु में कोई न कोई फसल उगा ली जाती है। अभी हाल में बड़े बड़े बांध बना कर नदियों से सिंचाई की नहरें निकाली गई हैं। इस तरह के नये ढंग को सिंचाई के बांध हिंडिया के पास फरात में हिंडिया बारेज (बांध), दीवानिया के पास दुगरा बांध, बेदा बांध और बगदाद से कुछ दूर दजला के पास दयाला बांध हैं।

यह भाग मैदान और पहाड़ी भाग के बीच में स्थित है। अगर फैस खबूर से खानकिन तक एक रेखा खींची जावे तो यह रेखा पहाड़ी भाग और इस ऊंचे प्रदेश के बीच में सीमा बनावेगी। इस ऊंचे प्रदेश का अधिकतर भाग कड़ा कंकड़ीला (जिप्सम का) रेगिस्तान है। लेकिन इसका उत्तरी-पूर्वी और उत्तरी भाग अधिक अच्छा है। यहां मिट्टी बड़ी उपजाऊ है और निचले मैदान से तिगुना (१८ इंच) पानी बरसता है। यह एक लहरदार (कहीं कुछ ऊंचा और कहीं कुछ नीचा) मैदान है। इसकी उँचाई समुद्रतल से ७०० फुट से लेकर १५०० फुट तक है। मूसल नगर की उँचाई ७०३, किरकूक की १०८७ और अर्बील की उँचाई १२५० फुट है। इन तीनों नगरों के पड़ोस की ज़मीन बड़ी



उपजाऊ है। पानी इतना बरस जाता है कि सरदी में बोया हुआ अन्न बिना सिंचाई के उग आता है। अप्रैल और मई महीनों में यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर रहता है। इस ओर सिंचाई की कमी है। केवल अच्छी फसलों को उगाने के लिये किरकूट और अर्बील के पड़ोस में कारेज़ से सिंचाई होती है। पहाड़ की तलहटी में जहां कंकड़ीली जमीन है वहां सौ सौ फुट की दूरी पर छोटे छोटे कुएं खोद दिये जाते हैं। इन कुओं का घेरा इतना तंग है कि केवल एक मनुष्य आसानी से इनके भीतर जा सकता है। इनकी गहराई लगभग ५५ फुट होती है। यह कुएँ सुरंग द्वारा एक दूसरे से जोड़ दिये गये हैं। कारेज बनाने का काम पुराने होशियार कारीगरों ने किया है। इसका ढाल इस प्रकार रक्खा जाता है कि पानी आसानी से एक कुएँ से दूसरे कुएँ में जा सके।

पहाड़ी प्रदेश

फैस खबूर और खानकिन को जोड़ने वाली रेखा के उत्तर में सब कहीं पहाड़ हैं। इस पहाड़ी प्रदेश में कई पहाड़ियां एक दूसरे की समानान्तर चली गई हैं।

पहाड़ियां काफी ऊंची हैं। किसी किसी की उँचाई १४००० फुट है। इनके बीच बीच में उपजाऊ मैदान और घाटियां हैं। बसन्त ऋतु में यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर रहता है। इस समय पहाड़ियों पर बरफ रहती है और घाटियों में तरह तरह के फूल खिले होते हैं। सरदी की ऋतु में वहां खूब पानी बरसता है और आधी मई तक बरसता रहता है। ऊंचे भागों में बरफ गिरती है। सरदी की ऋतु में पहाड़ बरफ से घिरे रहते हैं। इस प्रदेश के उत्तरी भाग में फल खूब होते हैं। लेकिन उनको बाज़ार तक पहुंचाने में कठिनाई होती है। दक्षिणी भाग में तम्बाकू अच्छी होती है। सुलेमानिया, रानिया और कोई संजक इसके प्रधान केन्द्र हैं। इस तम्बाकू को बाजार तक पहुँचाने में आसानी रहती है।



जलवायु

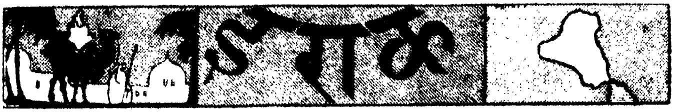
इराक़ का मैदानी भाग अत्यन्त खुश्क है। यहां वर्ष भर में लगभग ६ इंच पानी बरसता है। इस भाग का तापक्रम भी बहुत विकराल रहता है। सरदी की ऋतु में मामूली जाड़ा पड़ता है। जनवरी का तापक्रम ६० अंश फारेनहाइट रहता है। जुलाई में ११० अंश से ऊपर हो जाता है। दलदलों और डेल्टा के पास वाले तर भागों में गरमी और सरदी की ऋतु के तापक्रम में इतना अधिक अन्तर नहीं होता है। लेकिन हवा में अधिक नमी होने के कारण कम तापक्रम भी असह्य हो जाता है। इधर ही नमी और गरमी रहने के कारण मलेरिया भी अधिक फैलती है और हैजे का अक्सर प्रकोप होता है। बसरा के पड़ोस में इसी तरह की जलवायु है। बगदाद के पड़ोस की जलवायु अधिक खुश्क है। खुश्क गरमी अधिक होने पर भी स्वास्थ्य के लिये अच्छी रहती है।

यहां दिन और रात के तापक्रम में भी भारी अन्तर हो जाता है। दिन के समय १०० अंश से ऊपर तापक्रम रहता है। सूर्य छिपने पर भी काफी गरमी रहती है। सभी लोग बाहर खुले मैदान या छतों पर

सोते हैं। दोपहर के समय वे घरों को ठंडा रखने के लिये छिड़क लेते हैं। लेकिन सवेरे के समय इतनी ठंड पड़ती है कि सब लोग रजाई ओढ़े मिलते हैं। ऊपरी भागों में सरदी अधिक पड़ती है। वर्षा भी अधिक होती है। सरदी और गरमी के तापक्रम में कम अन्तर रहता है। दिन और रात के तापक्रम में भी कम अन्तर रहता है।



७

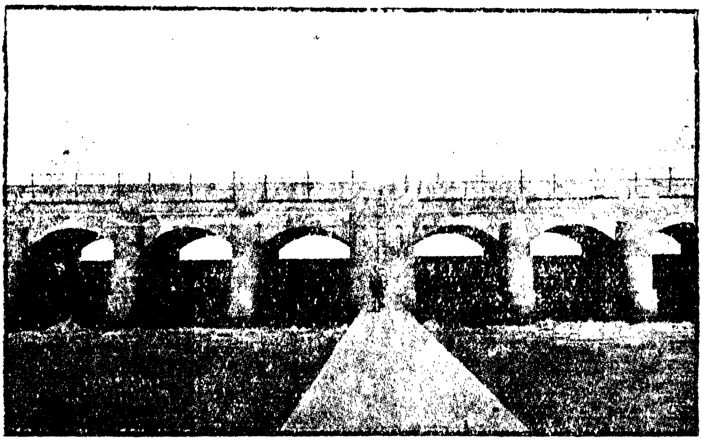


प्राचीन सिंचाई

इराक़ देश में कड़ी गरमी पड़ती है। गरमी के आठ महीनों में पानी बिलकुल नहीं बरसता है। ऐसे खुश्क देश में फसलों के सींचने और लोगों के पीने के लिये पानी की नहरों की समस्या बहुत पुराने समय से यहां के लोगों को चिन्तित करती रही है।

अब से कई हज़ार वर्ष पहले दजला और फरात नदियाँ अलग अलग फारस की खाड़ी में गिरती थीं। वे बग़दाद के पास ही दक्षिण की ओर खाड़ी में गिर जाती थीं। लेकिन इन नदियों के पानी में बहुत सी मिट्टी मिली रहती थी। इस मिट्टी से इन नदियों ने तेज़ी से फारस की उथली खाड़ी को भरना आरम्भ कर दिया। आज से ५००० वर्ष पहले फारस की खाड़ी का उत्तरी सिरा लगाश के पास था। इस समय बसरा से ६० मील दक्षिण में फारस की खाड़ी शुरू होती है। इस तरह इन नदियों ने ३६० मील लम्बा और १०० मील चोड़ा उपजाऊ मैदान बना दिया। इस (मिट्टी लाने के) काम में ईरान की कारून नदी ने भी बड़ी मदद

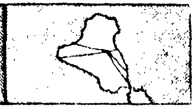
दी। इस उपजाऊ मैदान को सींचने की समस्या थी। दजला और फरात के निकास के पास बसन्त ऋतु में बरफ पिघलती है। तभी यहां जोर से बाढ़ आती है। यह बाढ़ ऐसे समय में आती है जब सख्त गरमी नहीं



८—हिंडिया बांध का एक दृश्य यहीं फरात नदी से सिंचाई की नहरें निकाली गई हैं।

पड़ती है। और फसलों को इसकी बहुत जरूरत उस समय नहीं होती है। लेकिन यह बाढ़ बड़ी तेजी से आती है और अक्सर नहर के सिरों को ढाह (गिरा)





डालती है। लेकिन सिंचाई की नहरों को निकालने में एक सुविधा है। इराक में बगदाद के दक्षिण में नदियों की तली पड़ोस की जमीन से कुछ ऊँची है। इसलिये नदियों से नहरों द्वारा खेतों तक पानी आसानी से पहुँचाया जा सकता है। लेकिन अगर नहर के सिरे को और मजबूत न किया जावे तो यह भी डर है कि नदी की प्रधान धारा नहर में उमड़ पड़े और पुरानी तली में मामूली पानी रह जावे। फरात नदी का कई बार यही हाल हुआ। दजला और फरात के बीच में बगदाद के नीचे इसी प्रकार की कई पुरानी धाराओं के मार्ग मिलते हैं। यहीं पुरानी नहरों के ऊँचे ऊँचे किनारे बने हैं। कौन नहर कब बनी इसका पता लगाना कठिन है। कुछ नहरों के सिरों पर इतनी मिट्टी इकट्ठी हो गई कि फिर उनमें होकर पानी न बह सका और वे बेकार हो गईं। फरात से पुराने समय में कुतहा, बेबिलान और कूफा या हिंडिया नहरें निकलीं। पुराने समय में फरात नदी ने अपना वर्तमान मार्ग फलूजा के पास छोड़ दिया था और वह सियार, कुतहा और निप्पुर में होकर बहती थी। इस प्रकार प्रधान धारा दो बार पश्चिम की ओर मुड़ गई।

निष्पुर के नीचे नदी दो शाखाओं में बट गई थी। एक शाखा उरे और एरिदू को जातो थी जो पुराने समय में बन्दरगाह थे। दूसरी शाखा अदब और लगाश को जाती थी जो दूसरे बन्दरगाह थे। दजला नदी वर्तमान कूत के पास दो शाखाओं में बँट गई थी। ऊपरी भाग में दजला से ही नहरवाँ और दुजैल नहरें निकाली गई थीं।



उपज

इराक़ देश में ८० फीसदी ज़मीन ऐसी रेगिस्तानी, अर्द्ध रेगिस्तानी, दलदली और पहाड़ी है कि वहां कोई फसल नहीं उग सकती। २० फीसदी ज़मीन खेती के योग्य है। इसमें उत्तरी भाग की केवल ९ फीसदी ज़मीन ऐसी है जो वर्षा के आधार पर साधारण सिंचाई से तयार हो जाती है। दक्षिण की ओर ११ फीसदी ज़मीन में बिना नहर की सिंचाई के खेती नहीं हो सकती। इस खेती के योग्य २० फीसदी ज़मीन के कुछ ही भागों (१/१० भाग) में खेती होती है। प्रत्येक प्रान्त में कितनी ज़मीन खेती के योग्य है यह नीचे दी हुई तालिका में दिखलाया गया है :—

लिवा (ज़िला)	क्षेत्रफल वर्गमील	कृषि-प्रदेश खेती के योग्य क्षेत्रफल
मूसल	४५,८००	१५,०४०
अर्बील	१६,६००	७,१६०
सुलेमानी	९,५००	२,५५०
किर्कूक	२०,८००	१५,२६०
दियाला	१६,२००	३,८२०
बग़दाद	२२,१००	४,८७०
दुलैम	१,२४,५००	१,५७०
कर्बला	२१,२००	६८०

हिला	८,१००	६,५३०
कूत	१६,४००	१०,७१०
दीवानिया	८३,०००	११,४७०
मुन्तफिक	३८,५००	५,०८०
अमारा	१९,७००	६,६८०
बसरा	१०,९००	७८०
योग	४,५३,५००	९२,२००

इराक में खेत का अधिकार प्राचीन तुर्की शासन के अनुसार पांच प्रकार का है :—

१—मुल्क या अल् आराज़ी अल् मुमलूका में धार्मिक व्यवस्था के अनुसार स्वामी का पूरा अधिकार है।

२—मीरी (अल् आराज़ी अल् अमीरिया) सरकारी भूमि है। केवल उसको काम में लाने का अधिकार दिया गया है।

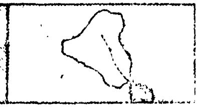
३—वक़्फ (अल् आराज़ी अल् मुक़फा) वह ज़मीन है जो धार्मिक काम के लिये नियत की गई हो।

४—मतरूका वह ज़मीन है जो किसी सार्वजनिक काम के लिये छोड़ दी गई हो।

५—मेवात मरुभूमि या मृतक भूमि है जो किसी काम में न लाई गई हो।



इराक



इराक़ में खेती की अपेक्षा चराने का काम कहीं अधिक होता है। खुश्क प्रदेश में जहाँ सिंचाई का प्रबन्ध नहीं है वहां भी कुछ भागों में घास उग आती है। जानवर चराने में मेहनत भी कम पड़ती है। इसी से इराक़ में भेड़ बकरी, ऊंट, गधे, गाय-बैल और घोड़े खूब पाले जाते हैं। केवल नदी के पास वाले तर भागों में भैंस पाली जाती है। छुहारे को छोड़कर पशु ही इराक़ की प्रधान सम्पत्ति हैं। पिछली बार भेड़-बकरी, ऊँट आदि मिलाकर आठ लाख पशु यहां से बाहर भेजे गये। इनका मूल्य ८७ लाख रुपया हुआ। पौने दो करोड़ रुपये का चमड़ा और साढ़े तीन करोड़ रुपये की ऊन बाहर भेजी गई।

खेती बहुत पुराने ढंग से होती है। गेहूँ, जौ, दाल, कपास और तम्बाकू यहां की प्रधान फसलें हैं। नदी के पड़ोस में जहां सिंचाई की अधिक सुविधा है वहां धान भी होता है। कुछ भागों में अंडी और शहतूत के पत्ते खिलाकर लोग रेशम के कीड़े पालते हैं। लेकिन इराक़ की प्रधान फसल छुहारा है। ९ करोड़ रुपये का लगभग सवा छः लाख टन छुहारा बाहर भेजा जाता है।

—:o:—

छुहारे के बगीचे

छुहारे का पेड़ बीस-पच्चीस गज़ ऊँचा होता है। निचले भाग में पत्ती या हरियाली का नाम नहीं होता है। लम्बी लम्बी पत्तियों का गुच्छा चोटी पर होता है। आरम्भ में इसी तरह की पत्तियां निचले भाग में थीं। उनके गिर जाने पर उनके निशान छूट गये और ऊपर की ओर दूसरी पत्तियां निकल आईं।

कहा जाता है कि छुहारे के पेड़ को नरक के समान झुलसाने वाली कड़ी गरमी और जड़ों को स्वर्ग के समान शीतलता की आवश्यकता है। सचमुच छुहारे का पेड़ इराक़ के उन्हीं भागों में होता है जहां ऊपर से तो वर्षा का अभाव है लेकिन जड़ों में भी सिंचाई की नालियों द्वारा बराबर पानी पहुँचता रहता है। जिस भाग में दजला और फरात की संयुक्त धारा फारस की खाड़ी में गिरती है उसी भाग में बीसियों मीलों तक शत्तल-अरब के दोनों किनारों पर छुहारे के बगीचे चले गये हैं। हर बगीचे के चारों ओर अक्सर कच्ची दीवारों का घेरा होता है। यहीं दुनियाभर में सबसे अधिक छुहारे पैदा होते हैं। यहां इतने अधिक छुहारे पैदा होते हैं कि वे सब के सब यहां नहीं खर्च हो सकते हैं। इसी से हर साल लाखों

मन छुहारे यहां से बाहर भेजे जाते हैं। इराक़ के निचले भाग के छुहारों को बाहर भेजने का प्रधान केन्द्र बसरा है। यहां चीड़ के तख़्तों और लकड़ियों का ढेर लगा रहता है। इन्हीं चीड़ के सन्दूकों में छुहारे और खजूर



१०—छुहारा ही इस देश का प्रधान भोजन है

बन्द होकर बाहर जाते हैं। जो छुहारे बग़दाद से टर्की और दूसरे भागों को भेजे जाते हैं वे अधिकतर चमड़े की खालों में बन्द होकर जाते हैं।

जब छुहारे की फसल पक कर तयार होती है तब अड़ोस पड़ोस से हज़ारों मज़दूर छुहारे के बग़ीचों में काम करने आ जाते हैं। कड़ी धूप में बीस या पच्चीस गज़ ऊँचे पेड़ के ऊपर चढ़ना आसान नहीं है। इस सीधे सपाट पेड़ में पैर जमाने के लिये पुरानी पत्तियों के ठूँठ को छोड़ कर टहनियों का नाम नहीं होता है। फिर भी इराक़ी लोग अपने ढीले कपड़ों को समेट कर बड़ी फुरती से ऊपर चढ़ जाते हैं। उनके चढ़ने से लम्बे पत्तों की आड़ में छिपी हुई गिलहरियों की आफत हो जाती है। बहुत दिनों तक तो वे निश्चिन्त होकर कच्चे, अधपके और पके छुहारों को खाती रहती हैं। लेकिन फल तोड़ने के समय वे अपनी जान बचाने के लिए एक पत्ते से दूसरे पत्ते पर खरखर की आवाज़ करती हुई भागती हैं। अन्त में कहीं छिपने की जगह न पाकर वे लद लद नीचे गिर पड़ती हैं। ऊँचाई से गिरने के कारण वे एक क्षण के लिए सुन्न हो जाती हैं। लेकिन नीचे खड़े हुए बच्चों के चिल्लाने और भागने से वे झट दौड़कर दूसरे पेड़ पर चढ़ जाती हैं। पेड़ के ऊपर चढ़कर पके फलों के गुच्छों को काटने और हिलाकर गिराने का काम मर्द लोग करते हैं। लेकिन

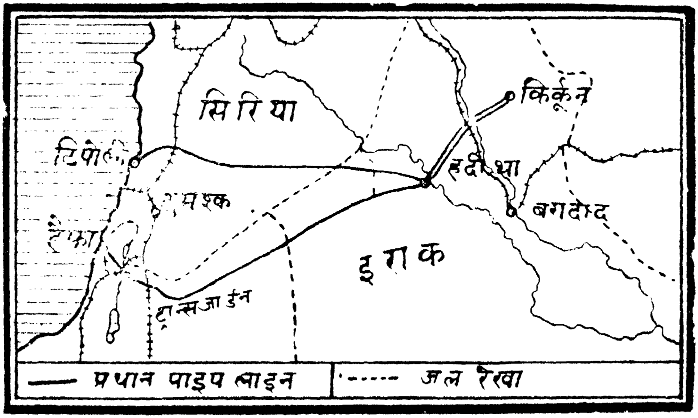
नीचे उन्हें इकट्ठा करने और छांटने का काम स्त्रियां और बच्चे करते हैं ।

पेड़ पर पका हुआ ताज़ा छुहारा बड़ा स्वादिष्ट होता है । उसका स्वाद वहीं पर तोड़ते समय मिल सकता है । बाहर भेजने के लिए अक्सर कुछ कच्चा छुहारा तोड़ लिया जाता है और धूप में सुखाकर भेजा जाता है । पिंड खजूर, पकने पर तोड़ा जाता है । तोड़ते समय बलुई ज़मीन पर गिरने से बचाने के लिए चटाई और कम्बल बिछा लिये जाते हैं । फिर भी उनमें कुछ मिट्टी मिल ही जाती है । छुहारे का पेड़ इराक़ी लोगों के बड़े काम का होता है । वे इसकी लकड़ी से घर पाटते हैं । पत्तियों से चटाई और टोकरी बनाते हैं । फल उनके खाने के काम आते हैं । जो लाखों मन फल फालतू बच जाते हैं उन्हें बाहर भेज कर वे करोड़ों रुपया कमाते हैं । जितनी आमदनी इराक़ की और सब फसलों को मिलाकर नहीं है उतनी इस अकेले छुहारे के कारबार से होती है ।

देश दर्शन

तेल के चश्मे

लाखों वर्ष पहले हमारी पृथ्वी के ऊपरी धरातल पर बड़ी उथल पुथल हुई। कहीं घने जंगल थे। वे ऊपरी तहों के नीचे दब गये। ऊपरी तहों के दबाव और भीतरी गरमी से वे कोयले की खानों में बदल गये।



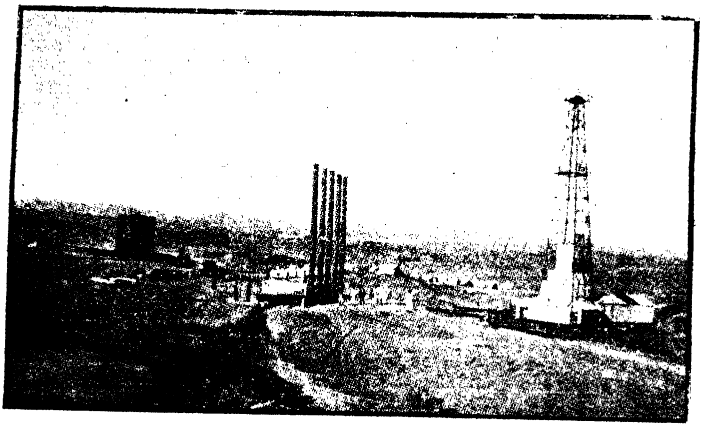
११

इसी तरह जो असंख्य मछलियां और दूसरे जानवर दब गये उनकी चरबी अभ्यन्तर (भीतरी) पानी के ऊपर तैरती हुई अनुकूल स्थानों में इकट्ठी हो गई। इसी

से मिट्टी का तेल बन गया। अधिकतर भागों में खोदने से कुओं में पीने का पानी निकलता है। कुछ भागों में पानी के बदले मिट्टी का तेल निकलता है। कहीं कहीं पर यह बहुत गहराई पर होता है। इसलिये इसे खोद कर निकालने के लिये विशेष ढंग की मसीनों से काम लिया जाता है। तेल को खोदकर निकालने, सैकड़ों मील लम्बे नल से बन्दरगाह तक भेजने और साफ करने में बहुत रुपये की जरूरत पड़ती है। इसलिये तेल निकालने का काम धनी कम्पनियां ही कर सकती हैं। आजकल तेल साधारण कारबार के अतिरिक्त फौजी लारियों हवाई जहाजों और तेज़ जहाज़ों के चलाने के लिये भी काम आता है। इसलिये संसार के शक्तिशाली देश तेल को अपने अधिकार में रखना चाहते हैं। इराक का तेल ब्रिटिश कम्पनियों के हाथ में है।

टर्किश पेट्रोलियम कम्पनी को १६२५ से तेल का फरमान इराक़ सरकार से मिल गया। कुछ भागों को छोड़ कर इस अंग्रेजी कम्पनी को सारे इराक़ में तेल का पता लगाने और उससे लाभ उठाने का अधिकार मिला हुआ है। पहले कम्पनी को २४ प्लाट (खंडों)

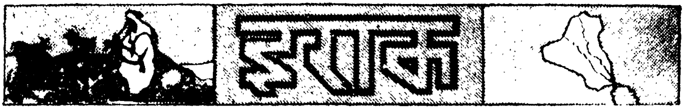
से तेल निकालने का अधिकार मिला। प्रत्येक प्लाट (खंड) ८ वर्ग मील का था। इसके बाद दूसरे प्लाटों (खंडों) का नीलाम हुआ। फिर तेल को बाहर भेजने के लिये भूमध्यसागर के बन्दरगाहों तक ५०० मील लम्बी पाइपलाइन (नल) निकालने की आज्ञा मिल



१२—तेल के प्रदेश का एक दृश्य

गई। टर्किश पेट्रोलियम नामी ब्रिटिश कम्पनी ने पहले निम्न स्थानों में परीक्षार्थ खुदाई की थी :—

बाबा गुरगुर—यह किरकूर से ५ मील उत्तर की ओर है।



नफ़्तिल—यह किरकूर से लगभग १० मील दक्षिणी-पूर्व की ओर है।

जम्बुर—यह नौक के पास और २५ मील दक्षिण को है।

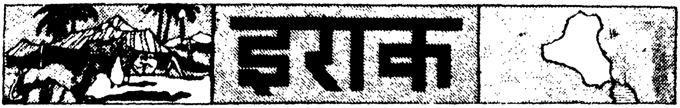
पालखाना—यह तुज के पास और किरकूट से ५५ मील दक्षिण को है।

इनजाना } यह जबाल हम्रीन के दक्षिणी
खशमल अहमार } भाग में है।

कैयारा—यह मूसल से ६० मील दक्षिण शेरगंज के पास है। इन सब स्थानों में पूरी सफलता मिली। लेकिन खोदने से पहले दुर्गम प्रदेश में सड़क बनाने, मजदूरों के लिये पानी पहुँचाने के लिये नल लगाने और तेल बाहर ले जाने के लिये भी नल लगाने में बड़ी कठिनाई हुई और बहुत खर्च हुआ। अफसरों, मजदूरों के लिये घर बनाना भी आवश्यक था। पाइप लाइन लगाने का काम करने के लिये कुछ अमरीकन मज़दूर बुलाये गये जो केलिफोर्निया में इस तरह का काम कर चुके थे। फिर भी ७५ फीसदी साधारण मज़दूर इराकी थे। इस

कारबार से इराक को काफी आमदनी हो गई है और नये किरकूक की तो सूरत ही बदल गई है।

खानकिन आयल कम्पनी दूसरी ब्रिटिश कम्पनी है। यह एंग्लोपर्शियन आयल कम्पनी की शाखा है। यह बग़दाद से ११० मील दूर तेल निकालने का काम करती है। तेल के प्रदेश को नफ्त खाना फील्ड (क्षेत्र) कहते हैं। इस तेल-प्रदेश का आधा भाग इराक और आधा भाग ईरान में शामिल है। इराकी देश में तेल के तीन बड़े बड़े चश्मे हैं। इनसे इतना अधिक तेल निकलता है कि इस तेल को खानकिन की रिफाइनरी (तेल साफ करने के कारखाने) तक पहुँचाने के लिये ३० मील लम्बी पाइप लाइन बनाई गई है। बसरा को छोड़ कर और सब भागों में इस कम्पनी के तेल और दूसरी चीजों की बिक्री होती है। सस्ता तेल मिल जाने से इराक में जगह जगह पर सिंचाई के लिये पानी निकालने वाले इंजिन लगाये गये हैं।



आने जाने के साधन

जल मार्ग—बसरा का बन्दरगाह शत्तल-अरब पर फारस की खाड़ी से ८० मील भीतर की ओर है। यहां हर महीने लन्दन और ग्लासगो से जहाज आया करते हैं। बम्बई और कराची से हर हफ़्ते छोटे छोटे जहाजों पर सामान और मुसाफिर आते हैं।

इराक़ की नदियां भी यहां के व्यापार के लिये बहुत सुन्दर जल-मार्ग बनाती हैं। दजला और फरात में हर साल बाढ़ आती है। इससे बचने और सामान ढोने के लिये यहां के लोग पुराने समय से नाव चलाते रहे हैं। प्राचीन उर नगर की खुदाई में जो चांदी की नाव निकली वह यहां की आजकल की नावों से मिलती जुलती है। बहुत से लोग नरकुल की गोल नावों में ऊपर से तारकोल का लेप कर लेते हैं।

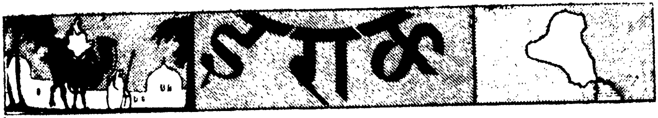
इराक़ में नाव चलाने में दो कठिनाइयां पड़ती हैं। यहां उत्तर-पश्चिम की ओर से हवायें चला करती हैं। इससे ऊपर से नीचे की ओर आने में धारा के साथ आने वाली नावों को तो वे सहायता पहुँचाती हैं।

लेकिन नीचे से ऊपर धारा के विरुद्ध जाने वाली नावों को हवा का भी सामना करना पड़ता है और उन्हें खेने में बड़ी कठिनाई होती है। दूसरे यहां की नदियां गरमी की ऋतु के बाद शिशिर में बड़ी उथली हो जाती

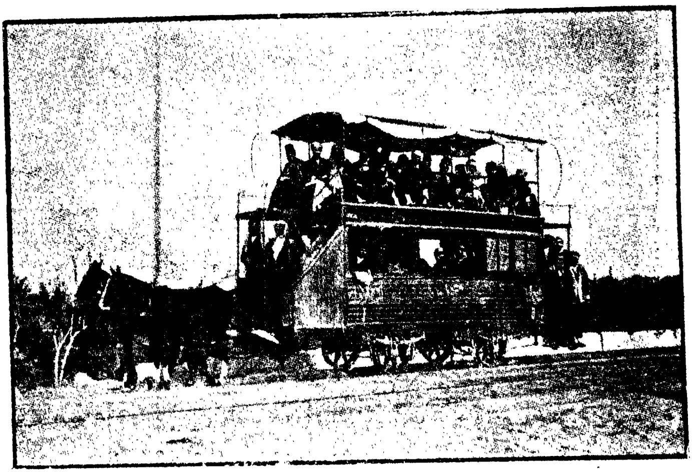


१३—इराकी लोग अपने लदे हुए गधों को थोड़ी थोड़ी दूर पर ठहराकर सफर करते हैं।

हैं। उनमें बड़ी नावें नहीं चल सकतीं। जिन नावों की तली ३॥ फुट से अधिक पानी में डूबी रहती है वे भारी नावें दजला नदी में भी नहीं चल सकतीं। फरात नदी



तो दजला से कहीं अधिक उथली है। फिर भी इराक़ देश में नावों का व्यापार बड़े काम का है। यूफ्रेटीज़ एण्ड टाइग्रीज़ नेवीगेशन कम्पनी एक अंग्रेज़ी कम्पनी है। यह यहां १८६० ई० से अपनी धुआंकश नावें (स्टीमर) चला रही है।



१४—करबला के पास यात्रियों को ले जाने वाली घोड़ा गाड़ी

दजला नदी में मूसल और बग़दाद के बीच में अप्रैल और मई की बाढ़ में ही नावें चलती हैं। बैजी में रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। इसलिये मूसल और बैजी

के बीच में नावों के चलने से बड़ा लाभ होता है। लकड़ी के बड़े लट्ठों के नीचे फूली हुई खालों को बांध कर बल्ली से खेने का काम तो ज़ाब नदी में भी कुछ दूर तक होता है। दजला में इसी तरह के बेड़े पर मूसल से बगदाद तक सामान आता है। बसरा और बगदाद के



१४—ऊँटिनी सवार या इराक़ी पुलिस (रेगिस्तानी प्रदेश में अमन रखने के लिये पुलिस के लिये ऊँट बड़े काम का होता है।)

बीच में नियमपूर्वक छोटे छोटे स्टीमर चलते हैं। स्टीमर यात्रा में तीन दिन से ७ दिन तक लगते हैं। बादबानी नावें बहुत हैं। मोटरबोट (नावें) भी किराये पर चलती हैं।

फरात नदी अपने निचले भाग में बहुत उथली है। हम्मार झील भी इसी तरह कीचड़ से भर गई है। इससे फरात नदी और हम्मार झील में नावें नहीं चल सकतीं। बादबान लगाने वाली छोटी छोटी नावें कुछ सामान

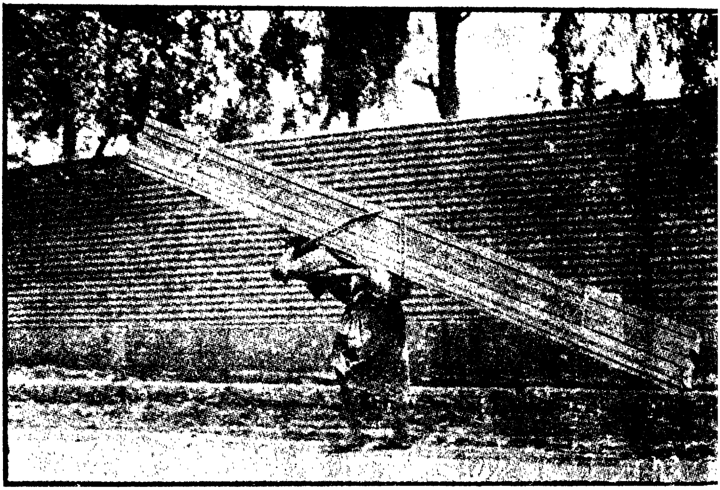


१६—बग़दाद के पास दजला नदी में चलने वाली कूफ़ा (गोल) नाव।

अवश्य ढोया करती हैं। फरात नदी के बीच वाले भाग में मोटरबोट (नावें) भी चला करती हैं।

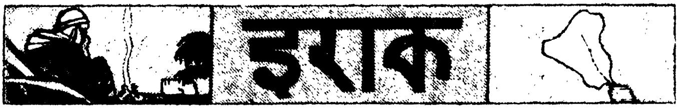
दियाला नदी निचले भाग में गरमी में प्रायः सूख जाती है। ऊपरी भाग में टेबिल माउन्टेन (पर्वत) के नीचे इसमें छोटी छोटी नावें अक्सर चलती हैं।

है या गराफ नदी में बादवानी नावें और छोटे स्टीमर चल सकते हैं। केवल गरमी में यह सूख जाती है। शत्तल-अरब दजला और फरात की संयुक्त धारा है। करना के पास ये दोनों नदियां मिलती हैं। शत्तल-



१७—इराकी कुली लकड़ी का बोझा ले जा रहा है।

अरब में बसरा तक समुद्री जहाज़ चलते हैं। वैसे ज्वार का असर करना नगर तक पहुंचता है। शत्तल-अरब में मुहाने के पास एक छिपी हुई दीवार थी। इससे जहाजों को



ऊपर आने में बाधा पड़ती थी। एंग्लो पर्शियन आयल कम्पनी चाहती थी कि उसके तेल भरने वाले टैंकर जहाज़ आबदान तक आ सकें। आबदान बन्दरगाह फारस की खाड़ी और बसरा के बीच में पड़ता है। यही तेल भेजने का प्रधान बन्दरगाह है। कई करोड़ रुपया लगाकर नदी गहरी कर दी गई। इससे अब बड़े बड़े जहाज़ भी बसरा तक जा सकते हैं।

रेल मार्ग—बग़दाद शहर से चार रेलवे लाइनें चलती हैं। एक लाइन बगदाद से माकिल (बसरा बन्दरगाह) तक आती है। एक लाइन ईरानी सीमा के के पास खानेकिन में समाप्त हो जाती है। एक लाइन किरकूक और एक लाइन बैजी में समाप्त हो जाती है। बग़दाद-बसरा लाइन से एक छोटी शाखा लाइन कर्बला और दूसरी शाखा लाइन नसीरिया को गई है। इस लाइन का अन्तिम स्टेशन बग़दाद वेस्ट (पश्चिमी बग़दाद) में है। दजला के दूसरे किनारे पर बग़दाद नार्थ और बग़दाद ईस्ट से खानकिन और किरकूक को रेलवे लाइन गई है। इराक़ की अधिकतर रेलवे मीटर

गेज है। सब रेलवे लाइनों की लम्बाई लगभग ७५० मील है।

मोटर-मार्ग—इराक़ देश में मोटर के लिये पक्की सड़क कुछ ही मील है। लेकिन रेगिस्तानी ज़मीन अक्सर कड़ी मिलती है। बगदाद से दमश्क और बेरूत के लिये हर हफ्ते नियमपूर्वक मोटर लारियां छूटा करती हैं। फलूजा के पास पुल के ऊपर से वे फरात नदी को पार करती हैं।

अलप्पो और बगदाद और अलप्पो और मूसल के बीच में भी मोटर चला करते हैं। वर्षा हो जाने पर कच्चे रास्तों में मोटर का चलना बन्द हो जाता है।

इराक का देश हवाई जहाजों के रास्ते में पड़ता है। इम्पीरियल एअरवेज़ के हवाई जहाज़ बगदाद और बसरा होकर योरुप से हिन्दुस्तान (कराची) को आते हैं।

निवासी

इराक़ देश में २८,५०,००० मनुष्य रहते हैं। इनमें १४,६०,००० शिया, ११,५०,००० सुन्नी, ८८,००० यहूदी, ७६,००० ईसाई, और ४३,००० हिन्दू आदि दूसरे लोग हैं। बग़दाद के दक्षिण वाले प्रान्तों में शिया लोगों की प्रधानता है। बग़दाद और उत्तर की ओर दुलैम, मूसल, अर्बील, किरकूक और सुलेमानिया प्रान्तों में सुन्नी लोगों की प्रधानता है। यहूदी लोग अधिकतर बग़दाद में रहते हैं। ईसाई लोग अधिकतर मूसल प्रान्त में रहते हैं। कुछ बग़-



१८ अच्छे घराने का एक सुसज्जित अरबी

दाद में भी रहते हैं। शेष लोगों में यज़ीदी लोगों की प्रधानता है जो प्रेतों की पूजा करते हैं। कुछ हिन्दू लोग बग़दाद में व्यापार करते हैं। कुछ रेल और दूसरे विभागों में नौकरी करते हैं। लेकिन पहले से उनकी संख्या यहां बहुत कम हो गई है।



१९—बुड्ढा कातिब एक दूसरे अनपढ़ इराकी की चिट्ठी लिख रहा है

बग़दाद और दूसरे बड़े शहरों के बाहर इराक की आबादी बड़े बड़े कबीलों या फिरकों में बटी हुई है। हर एक कबीले के लगभग १०० घर हैं। उनका एक

सरदार होता है। जिसे शेख़ कहते हैं। वह अपने कुटुम्ब वालों के झगड़े तय करता और ज़मीन का बटवारा करता है। अगर वह ज़बरदस्त होता है तो वह अपने लिये बहुत सी ज़मीन रख लेता है। अगर वह कमज़ोर होता



२०—इराक़ी नाई

है तो उसके कबीले वाले अक्सर उसकी बात नहीं मानते हैं और उसके लिये बहुत थोड़ी ज़मीन छोड़ते हैं। फिरकों के आपस के झगड़े कभी कभी कई पुश्तों से

चले आते हैं। खून का बदला लेना वे कभी नहीं भूलते हैं। मैदानी भाग में बद्दू लोग अधिक रहते हैं। वे भेड़, बकरी, ऊंट और गधे पालते हैं। वे घास और पानी की तलाश में मारे मारे फिरते हैं। जहां पानी मिलता



२१—इराक़ी कुम्हार सुराहियों को बड़े अच्छे ढंग से सजाता है

है और घास होती है वहीं वे डेरा डालते हैं। उनके डेरे ऊंट या भेड़ की ऊन के बने होते हैं। रस्सी अक्सर बकरी के बालों की बनी होती हैं। नदी के पड़ोस वाले बद्दू कुछ खेती भी कर लेते हैं। दलदल के पड़ोस वाले

बद्दू भैंस पालते हैं। वे अपने रहने के लिये मिट्टी के कच्चे घर या नरकुल के झोपड़े बनाते हैं। इराकी लोगों का जीवन बड़ी कठिनाई से बीतता है। अधिकतर लोग गेहूं की मोटी रोटी और प्याज खाकर गुजर करते हैं।

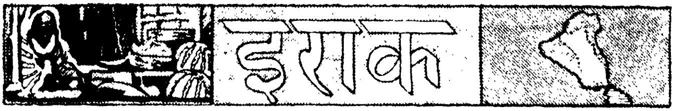


२२—इराक देश के अरबी बढ़ई

कुछ लोग अपनी रोटी में छुहारे का आटा भी मिला लेते हैं। धनी लोग दूध, दही, मक्खन और मांस भी खाते हैं।

शहर में बसे हुए लोगों का जीवन बहुत सुख से बीतता है। उनको आराम की सभी चीजें बड़ी आसानी

से बाजार में मिल जाती हैं। शहर की ही स्त्रियों में परदा है। बाहर की बद्दू स्त्रियों में परदे का नाम नहीं है। यहाँ शहर की स्त्रियां अधिकतर काला बुरका डाल कर बाहर निकलती हैं। पुरुष भी अधिकतर काले रंग का ही लम्बा चोगा पहनते हैं। इसमें बटन की जगह तनी रहती है। वे अपने सिर पर एक बड़े चौकोर रूमाल को दुहरा करके डालते हैं और उसे काली रस्सी से बांध लेते हैं। कुछ लोग ऊंची गोल टोपी भी पहनते हैं। खुद्दाम लोग अपनी लाल टोपी के निचले भाग में हरी पट्टी बांध लेते हैं। खुद्दाम लोग अरबी पंडे होते हैं। वे बाहर से आये हुए मुसलमान यात्रियों को तीर्थों व ज़यारतगाहों का दर्शन कराते हैं। जो दक्षिणा उन्हें दीनदार यात्रियों से मिलती है उसी से उनकी गुज़र होती है। कुछ खुद्दाम लोग अपने मुसलमान यजमानों की तलाश में हिन्दुस्तान और दूसरे देशों में पहुँचते हैं। पहाड़ी भाग में बसे हुये आर्मेनिक लोग बड़े लड़ाका होते हैं। वे भेड़ बकरी पालते हैं। घाटी में बसे हुए लोग खेती करते हैं।



शासन प्रबन्ध

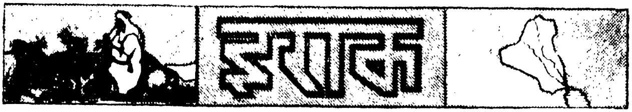
इराक़ के राजा (शाह) गाज़ी हैं जो शाह फैसल इब्न हुसेन के बेटे हैं पहले यहां लीग (राष्ट्र संघ) की ओर से ब्रिटेन का राज्य था। इस समय यहां से लीग शासन उठ गया। इराक राज्य को अपने देश पर शासन करने का पूरा अधिकार मिल गया। फिर भी यह देश ब्रिटिश साम्राज्य के ही अन्तर्गत है और यहाँ का राजा गाजी अपने पिता की तरह बाहरी मामलों में ब्रिटेन की सम्मति से काम करता है। इराक का राजा पार्ल्यामेंट की सहायता से कानून बनाता है। पार्ल्यामेंट में सभायें हैं। ऊपरी सभा सीनेट कहलाती है। इसके सदस्य नियत किये जाते हैं। चेम्बर आफ डिप्यूटीज़ के सदस्यों का चुनाव होता है। हर २०,००० पुरुषों के पीछे एक प्रतिनिधि (डिप्यूटी) चुना जाता है। प्रत्येक बिल (कानून) दोनों धारा सभाओं में बारी बारी से पेश होता है। अन्त में वह राजा के पास स्वीकृति के लिये आता है।

इराक़ के मन्त्रिमंडल में आठ मन्त्री होते हैं। प्रधान मन्त्री के सभापतित्व में इनकी बैठक हुआ करती

है। प्रधान मन्त्री ही विदेश-मन्त्री भी होता है। अन्य मन्त्री प्रधानमन्त्री की सिफारिस के अनुसार राजा नियुक्त करते हैं। मन्त्री लोग अपने अपने विभाग के लिये चेम्बर आफ डिप्यूटी के सामने उत्तरदायी होते हैं। इराक में (१) स्वदेश, (२) अर्थ, (३) न्याय, (४) गमनागमन, (५) सिंचाई (प्रफ) और कृषि, (६) शिक्षा, (७) रक्षा और (८) वक़्फ (धर्मादा) के ८ बिभाग हैं। इन्हीं के अलग अलग ८ मन्त्री होते हैं।

प्रबन्ध के लिये इराक देश १४ लिवा या जिलों में बटा हुआ है। मूसल (मोसूल), अर्बील, किरकूक, सुलेमानिया, दियाला, बगदाद, कूत, दुलैम, हिला, कर्बला, दीवानिया, मुन्तफ़िक, अमारा और बसरा १४ लिवा या जिले हैं। प्रत्येक जिले का प्रबन्ध एक मुत-सर्रिफ द्वारा होता है। वह स्वदेश मन्त्री के अधीन होता है। लेकिन वह दूसरे मन्त्रियों के लिये उत्तरदायी होता है। प्रत्येक लिवा में दो या अधिक कदह होते हैं। इनका प्रबन्ध एक क़ायममुक़ाम करता है। प्रत्येक कदह में दो या अधिक नहिया होते हैं। नहिया के हाकिम को मुदीर कहते हैं।

——:o:——



शिक्षा

इराक़ देश शिक्षा में बहुत पिछड़ा हुआ है। बद्दू लोगों में शिक्षा का नाम नहीं है। कहीं कहीं कुछ लड़के



२३—इराकी विद्यार्थियों को खेल-कूद में बड़ा आनन्द आता है

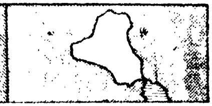
बालू पर हरूफों का लिखना सीख लेते हैं या क़ुरान की आयतों को (बिना अर्थ समझे) रट लेते हैं। शिक्षा का प्रबन्ध एक मन्त्री के हाथ में है। बसे हुये गावों और

नगरों में लगभग ३०० प्रायमरी स्कूल हैं। इनमें ३१ लड़कियों के लिये हैं। हरएक स्कूल में औसत से ६०



२४—इराक में साक्षर लोग कम हैं। इससे कातिबों को अच्छी आमदनी हो जाती है। बुरका ओढ़े स्त्री फीस देकर अपनी चिट्ठी लिखा रही है।





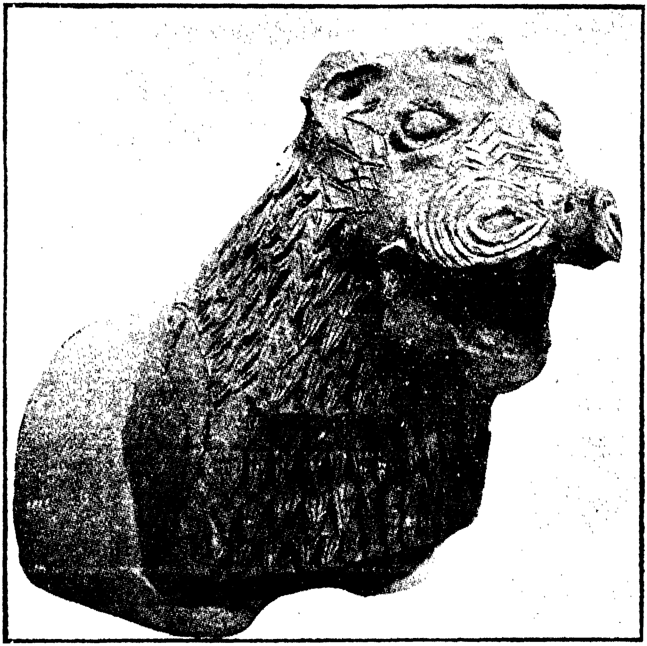
छात्र रहते हैं। बग़दाद और मूसल में लगभग १० हाई स्कूल और इन्टर कालेज हैं। इनमें ही कुछ ब्वाय स्काउट (बालचर) भी हैं। बग़दाद और मूसल में ही शिक्षकों के तयार करने के ट्रेनिंग स्कूल और कालेज हैं। बग़दाद में लकड़ी, धातु और बिजली का काम सिखाने के लिये भी एक स्कूल है। मूसल का कला-स्कूल बहुत छोटा है।

अभी इराक़ में कोई विश्वविद्यालय नहीं है। इंजीनियरिंग और दूसरे ऊँचे कामों को सीखने के लिए विद्यार्थी इंगलैंड को जाते हैं। कानून, दवाई (मेडिसिन) और कृषि के स्कूल बग़दाद में खुल गये हैं। अल इल बैत (बग़दाद) में धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

इराक़ के बहुत बड़े भाग में शिक्षा का माध्यम अरबी (भाषा) है। लेकिन उत्तरी पहाड़ी भाग में तुर्की और खुर्दिश भाषा द्वारा शिक्षा दी जाती है। यहाँ के विद्यार्थी गौण भाषा के रूप में अरबी को सीख लेते हैं।

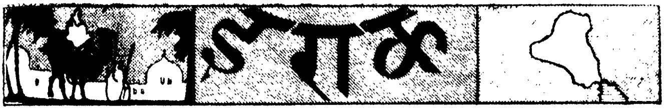
प्राचीन नगर

बेबिलान—यह नगर हिला रेलवे स्टेशन के पास पड़ता है। मुसाफिरों को लेने के लिये बेबिलान हाल्ट पर

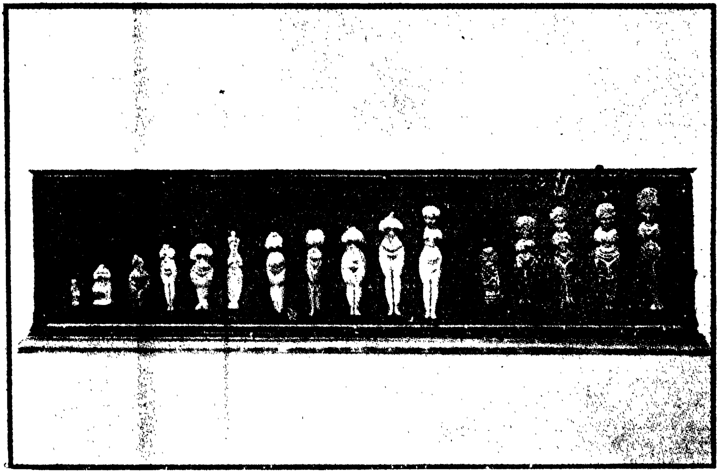


२९—प्राचीन खंडहर में ही मिट्टी का बना हुआ सिंह का यह सिर मिला है।

भी गाड़ी लगभग दो मिनट ठहर जाती है। यहाँ से बेबिलान के भग्नावशेष एकदम पास हैं। यह नगर ईसा से पूर्व



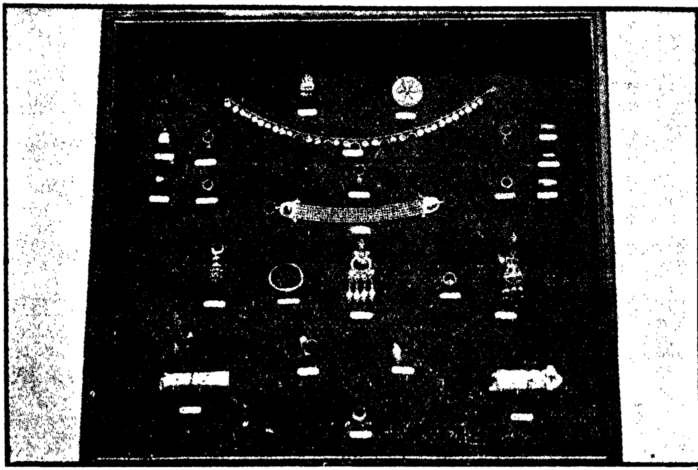
२५०० से ५३६ तक बेबिलोनिया की राजधानी रहा। यहाँ १८६६ से १६१५ तक जर्मन लोगों ने खुदाई की थी। असीरियन समय के भग्नावशेष मिले हैं। अधिकतर भग्नावशेष नबो पोलसार नबूकद्नज़र और नबोनि-



२६—सिल्यूसिया के हड्डी के ढांचे

द्स के शासनकाल के हैं। नबोनिद्स बेबिलोनिया का अन्तिम (ईसा से पूर्व ५५६-३३८) राजा था। ईरानी सम्राट सिरस और दारा के समय में भी बेबिलान कुछ प्रसिद्ध शहर रहा। सिकन्दर महान (एलेक्ज़ेण्डर) ने यहाँ

खंडहर पाये। यूनानियों ने इसकी मरम्मत करवाई। सिल्यसिया में राजधानी हो जाने पर भी बेबिलान एक तीर्थ स्थान बना रहा। पार्थियन लोगों ने यहाँ फिर कई इमारतें बनवाईं। यहाँ पाई गई कई चीज़ें बर्लिन और बग़दाद के अजायबघर में रक्खी हुई हैं।

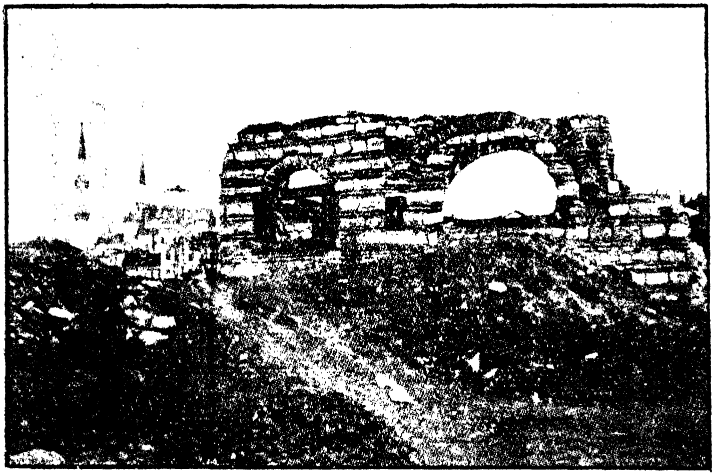


२७—सिल्यूसिया के जवाहिरात और आभूषण

बोर्सीया को बीर्स निमरूद भी कहते हैं। हिल्ला स्टेशन के पास पड़ता है। ईसा से पूर्व १२०० और ८०० के बीच में यहाँ शाही महल रहा। यहाँ नबू या नेबो

(सरस्वती) देवता का मन्दिर है। यहाँ एक जिग्गुरत (विशाल मन्दिर) था। जिससे यूनानियों ने वेधशाला का काम लिया।

सीपार—मुहम्मदिया और बगदाद रेलवे स्टेशनों के



२८—सुलेमानिया के भग्नावशेष

पास पड़ता है। अबू हब्बाह पास वाला गांव है। यहाँ शम्स या सूर्य भगवान का तीर्थस्थान है। ईसा से पूर्व २१०० और १६०० के बीच में यहाँ का व्यापार बहुत

बढ़ गया। ईसा से पूर्व ६२५ और ४५० के बीच में भी यहाँ का व्यापार बढ़ा चढ़ा रहा। यूनानियों के समय में यहाँ ज्योतिष का एक प्रसिद्ध विद्यालय था। १८७८ में एक अंग्रेजी और १६०० ई० में फ्रांसीसी पुरातत्व मंडली ने इस स्थान को खोद कर ढूँढ़ निकाला था।

किश—यह स्थान भी हिला स्टेशन के पास ईसाई प्रलय के बाद एक प्रसिद्ध शहर हो गया। ईसा से २५०० वर्ष पूर्व यहाँ चार राजवंशों ने राज्य किया। समस्त बेबिलोनिया समय में यह शहर आबाद रहा। १६१३ में फ्रांसीसियों और १६२३-२६में अंग्रेज़ों ने यहाँ खुदाई की थी।

हुरसगकालम्मा—हिला स्टेशन के पास एक प्राचीन किला था। ईसा से २००० वर्ष पूर्व बना था। यहीं वुद्धदेव का मन्दिर था। असीरिया और बेबिलोनिया की लड़ाइयों में आठवीं और सातवीं शताब्दियों में यह एक महत्वपूर्ण स्थान था।

निप्पुर—दीवानिया स्टेशन के बाद है। पास ही नफ्फार नया गांव है। यहाँ अनलील देव का पवित्र स्थान

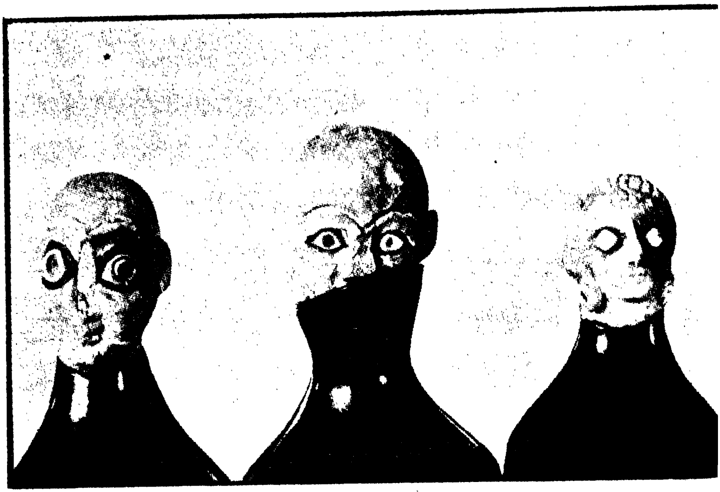
है। ईसा से २५०० वर्ष पूर्व यह स्थान प्रसिद्ध हो गया। ईरानी लोगों के समय तक यह एक व्यापार केन्द्र रहा। १८८७-१९०० में एक अमरीकन टोली ने यहाँ खुदाई की थी।

अदब—यह दीवानिया स्टेशन के पास पड़ता है। यह एक पुराना शहर था। ईसा से २५०० वर्ष पूर्व से यहां का एक राजवंश समीपवर्ती प्रदेश पर राज्य करता है। यहाँ बड़ी विशाल मूर्तियाँ मिली हैं। १९०३-४ में एक अमरीकन मंडली ने यहाँ पर खुदाई की थी।

शुरूप्पक—फरह के पास अति प्राचीन स्थान है। यहाँ ५००० वर्ष से अधिक पूर्व की सुमेरियन चीज़ें मिली हैं।

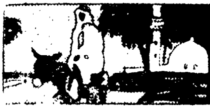
लगाश—नसीरिया स्टेशन के पास है। यह नगर ईसा से ३००० वर्ष पूर्व बसाया गया था। ईसा से २८००-२७०० पूर्व यहाँ उर-नीना वंश ने राज्य किया। आगे चलकर यह एक व्यापारिक केन्द्र रहा। फ्रांसीसियों ने उसकी खुदाई की थी। यहां की सुन्दर मूर्तियाँ और कारीगरी की चीजें उन्हीं के अजायबघर में हैं।

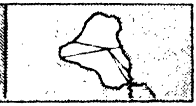
उर—यह उर-जंकशन के पास है। इसका टीला दूर से दिखाई देता है। यहां ईसा से २६०० और २१०० के बीच में चन्द्र-संस्कृति का प्रचार रहा। यहाँ कई (३) राजवंशों ने राज्य किया। ईसा से ७०० वर्ष पूर्व यहाँ



२१—खफाजी में पाये गये मिट्टी के तीन पुतले

प्रान्तीय काल्ड गवर्नर की राजधानी थी। उसी समय यह एक व्यापारिक बन्दरगाह था। उस समय फारस की खाड़ी का उत्तरी सिरा यहाँ तक फैला हुआ था।





यहां अमरीकन ओर अंग्रेज़ों ने खुदाई की थी। यहां की प्राचीन कब्रों में पाई हुई चीज़ें ब्रिटिश म्यूज़ियम, बगदाद म्यूज़ियम और फिलेडेलफिया (पेन्सिल्वेनिया) के यूनिवर्सिटी म्यूज़ियम में हैं। उर के पास ही निन हुँसाग का मन्दिर है। यह मन्दिर जन्म और मृत्यु की अधिष्ठात्री देवी का था।

एरिच—यह अलखिदहर स्टेशन के पास हैं। यह बेबिलान के हरकुलीज़ गिल्गमिश का निवास स्थान था। ईसा से पूर्व ३१०० और २३०० के बीच में इस नगर से पांच राजवंशों ने राज्य किया। यहां एक प्रसिद्ध ज्योतिष-विद्यालय और नमक का कार्यालय था। १९२८ ई० में यहाँ जर्मन लोगों ने खुदाई की।

दारूल हिजरा—यह कर्बला स्टेशन के पास है। यहां का महल अच्छी हालत में है। कहा जाता है कि यह सातवीं सदी का बना हुआ है और सासनी मुसलमानो का बनावाया हुआ है।

लर्सा—यह खिदहर स्टेशन के पास है यहां दक्षिणी बेबिलोनिया का एक राजवंश ईसा से पूर्व २१००-२०००

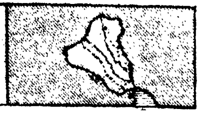
तक राज्य करता रहा । इलाम के लोगों ने इसे जीत लिया था । असीरियन समय में भी यह एक प्रसिद्ध शहर रहा ।

एरिदू—यह स्थान उर जंकशन के पास है । दक्षिणी सुमेरियन लोगों के कथनानुसार यह सबसे अधिक पुराना नगर है । यह वरूण या जलदेव का पवित्र स्थान रहा । यहां ईसा से २१०० वर्ष पूर्व की चीजें मिली हैं । १६१८-१६१६ में यहाँ एक अंग्रेजी पुरातत्व मंडली ने खुदाई की थी ।

कुतहा—यह हिला स्टेशन के पास है । यह प्राचीन बेबिलोनियन लोगों के अनुसार यमदेव (नर्गल) का स्थान था । ईसा से २१०० वर्ष पूर्व यह नगर विद्यमान था ।

सामर्रा—यह इसी नाम के रेलवे स्टेशन के पास है । यह नगर ईसा से २५०० वर्ष पूर्व आबाद था ८३६ ई० से ८६२ ईस्वी तक यह अब्बासी खलीफाओं की राजधानी रहा । इस बीच में वहां बहुत से महल बने और यह एक सुन्दर नगर हो गया । इसी से इसका यह





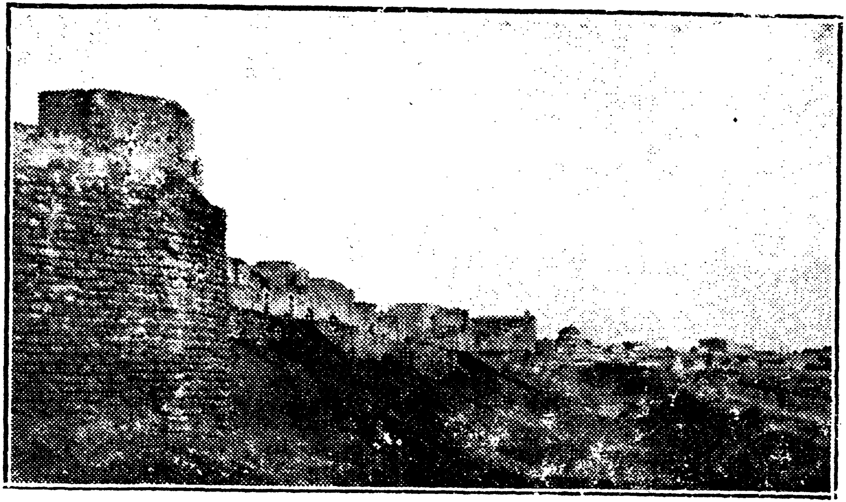
नाम पड़ा जो सुर्रा-मार्रा से बिगड़ कर बना है। इसका अर्थ है "जो इसे देखे वही प्रसन्न हो जावे"। १९१३-१४ में जर्मन लोगों ने इसकी खुदाई की थी। जो चीजें यहाँ मिलीं वे बर्लिन म्यूज़ियम और ब्रटिश म्यूज़ियम में पहुँच गई हैं।

विजय सेतु (विक्टरी ब्रिज)—१२३२ ईस्वी में इस पुल को खलीफा मुस्तन्सीर ने दुजैल नहर के ऊपर बनवाया था।

असुर—यह बैजी स्टेशन के पास है। यह असीरिया की सबसे पहली राजधानी रही। यहां मन्दिर किला और महलों के भग्नावशेष मिले हैं। १९००-९१४ तक जर्मन लोगों ने यहां खुदाई की। यहाँ पर मिली हुई चीज़ें इस्तम्बोल और बर्लिन के अजायबघरों में रक्खी गई हैं।

कलह—बैजी या किर्कूक रेलवे स्टेशन के पास है। ईसा से पूर्व ९वीं और ८वीं सदी में असीरिया की यह राजधानी रहा। यहां असुरबनिपाल के महल थे। यहाँ मिली हुई चीजें ब्रिटिश म्यूज़ियम में रक्खी गई हैं।

निनवा—यह बैजी या किर्कूक रेलवे स्टेशन से पास



३०—मोसूल का एक दृश्य

पड़ता है। मूसल नगर से यह कुछ ही दूर है। यह नगर ईसा से २००० वर्ष पूर्व स्थित था। ईसा से ७०५-६१२ वर्ष पूर्व यह असीरिया की राजधानी था। सेना चेरिब और उसके उत्तराधिकारियों ने यहीं राज्य किया। यहाँ की बहुत सी चीज़ें ब्रिटिश म्यूज़ियम में रक्खी हुई हैं।

दुर शर्रुकिन—यह बैजी या किर्कूक स्टेशन के पास पड़ता है। मोसूल से यह कुछ ही दूर है। असीरिया के सम्राट सर्गन द्वितीय ने यहाँ अपना राजभवन बनवाया था। यहाँ की चीज़ें बग़दाद, शिकागो और पेरिस के अजायबघरों में रक्खी हुई हैं।

अर्बेला—यह किर्कूक रेलवे स्टेशन के पास है और वर्तमान अर्बील नगर से कुछ ही दूर है। ईसा से २२०० वर्ष पूर्व यह नगर मौजूद था। समस्त असीरियन काल में इश्तर संस्कृति का यह एक प्रधान केन्द्र रहा। ईरानी सम्राट दारा ने भी इसे अपना एक शाही नगर बनाया था। इसी नगर के पास सिकन्दर ने दारा को हराया था। अबासी खलीफाओं के समय में भी अर्बेला एक व्यापारिक केन्द्र रहा।

देश दर्शन

मारबेहनम का मठ—यहाँ असीरियन समय के शाल मन्सेर तृतीय और सेना चेरिब के शिला लेख मिले हैं। यह वर्तमान अलखिद्हर नगर के पास है।

निपुर—यहाँ भी सेना चेरिब के शिलालेख मिले हैं यह वर्तमान जूदीदाग के पास है।

रब्बन होरमिज़्द का मठ—यहाँ प्राचीन ईरानियों का मृतक घर (कब्रिस्तान) था। पीछे से सातवीं ईस्वी में यहाँ ईसाई कब्रिस्तान हो गया।



३१

तीर्थ-स्थान

कर्बला, नजफ, कूफा, कादमिया और सामर्रा शिया मुसलमानों के तीर्थ-स्थान हैं। इराक, ईरान और हिन्दुस्तान से हर साल लाखों मुसलमान इनकी ज़ियारत करने जाते हैं। कर्बला में हुसेन और अब्बास के मकबरे हैं। हुसेन तो अली का बेटा था। हुसेन के सौतेले भाई का नाम अब्बास था। हुसेन मदीना में रहता था। कुफा के लोगों ने खलीफा होने के लिये उसे बुलाया। कर्बला के पास घमासान लड़ाई हुई। उसके दुश्मनों की संख्या कहीं अधिक थी। दुश्मनों ने हुसेन और उसके ३०० साथियों को ऐसा घेर लिया कि वे पानी तक नहीं पहुँच सकते थे। वे प्यास के मारे तड़पने लगे। इसके बाद उसके दुश्मनों ने उन्हें बेरहमी से कत्ल कर डाला। उन्हीं की यादगार में कर्बला में दो मकबरे बने हैं। मस्जिद के गुम्बद सुनहले हैं। मीनारें भी बड़ी सुन्दर हैं।

नजफ में हज़रत अली का मकबरा है। हज़रत अली मुहम्मद साहब के दामाद थे। एक बार हज़रत अली कूफा की मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे। इसी समय इनके दुश्मनों ने इन्हें मार डाला। फिर इनकी यादगार

में मकबरा बनाने की तयारी की गई। मकबरे का स्थान विचित्र ढंग से नियत किया गया। इनकी लाश एक ऊंट पर लदी थी। लोगों ने सोचा कि लाश लिये हुए ऊंट जहां पर ठहर जावे वही स्थान इनको मंजूर होगा। चलते चलते ऊंट उस जगह ठहरा जहां आजकल का नजफ नगर है। अतः यहीं हज़रत अली की यादगार में एक आलीशान मकबरा बनाया गया। नजफ कूफा से १६ मील और कर्बला से लगभग ४० मील दूर है।

कादमिया और सामर्रा में भी प्रसिद्ध मकबरे और ऐतिहासिक स्थान हैं।



बग़दाद

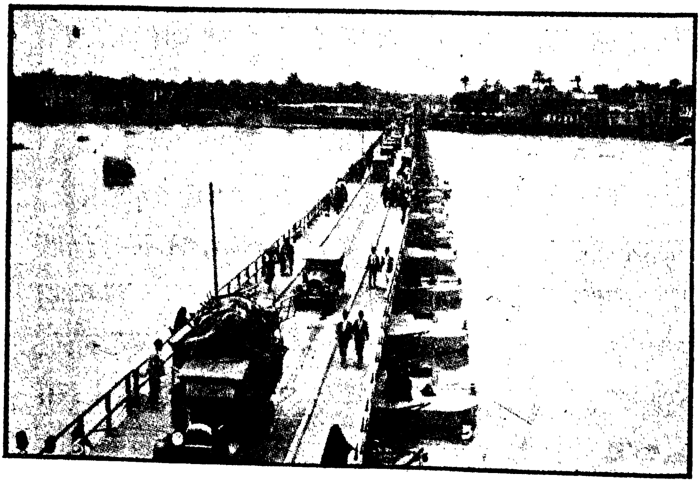
बग़दाद शहर इराक के ऐसे उपजाऊ और केन्द्रवर्ती भाग में स्थित है कि यहां भी इसके पड़ोस में अत्यन्त प्राचीन समय से कोई न कोई शहर रहा है। यह नगर दजला नदी के किनारे पर बसा है। शहर के प्रधान भाग दजला के पूर्वी किनारे पर स्थित हैं लेकिन रेलवे स्टेशन, हवाई स्टेशन और छोटा मुहल्ला पश्चिमी किनारे पर हैं। दोनों भागों को जोड़ने के लिये दो पुल बने हुए हैं। इनमें माड ब्रिज अधिक मज़बूत और सुन्दर है।

बग़दाद के पड़ोस में कुछ ऐसी (ढाई हज़ार वर्ष) पुरानी ईंटें मिलीं जिन पर सम्राट नबूकदनज़र द्वितीय का नाम उपाधि सहित खुदा हुआ था। इससे स्पष्ट हो गया कि यहीं प्राचीन बेबिलोनियन और सुमेरियन लोगों का बसाया हुआ बकदाद या बकदादु नगर था। इसी के पास ही ग्रीक (यूनानी) लोगों ने सिल्यूसिया, पार्थियन लोगों ने टेसीफान और ससानिद लोगों ने अल् मदाइन नगर बसाया था। उपजाऊ ज़मीन, नहरों का जाल और मार्गों का मेल होने से जहां एक राज्य और उसकी राजधानी का पतन हुआ उसके पास ही दूसरे राज्य ने अपनी नई नई राजधानी बनाई।

देश दर्शन

बग़दाद शब्द फारसी के दो शब्दों से बना है। बग़ का अर्थ ईश्वर और दाद का अर्थ है दिया हुआ इससे हम बग़दाद को ईश्वर-दत्त नगर कह सकते हैं।

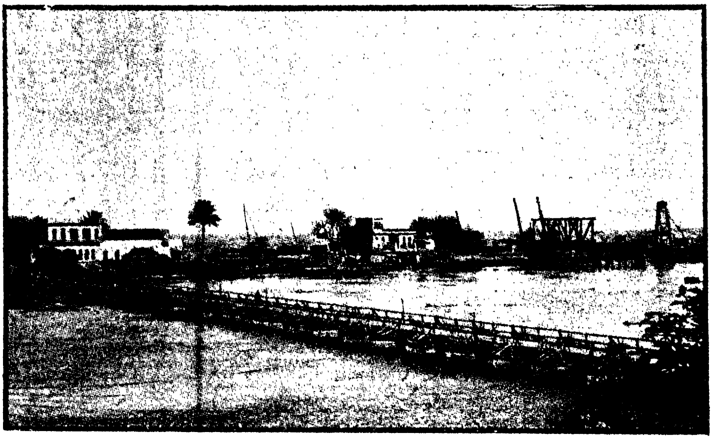
आठवीं सदी में जब अरबी लोगों का ईरान पर अधिकार हो गया तो उन्हें अल्मदाइन के स्थान पर



३३—दजला नदी पर बना हुआ बग़दाद का माड पुल

(जिसे उन्होंने ही ६३७ में नष्ट कर डाला था) एक व्यापार-केन्द्र के बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः सुक बग़दाद बसाया गया। इस मुसलमानी शहर को

खलीफा अल मन्सूर ने ७६२ में बसाया था। यह नगर दजला के पूर्वी किनारे पर गोल घेरे में बसाया गया। शहर के चारों ओर दुहरी दीवार थी। बाहर की ओर गहरी खाई थी। शहर चार भागों में बटा था। सड़कें

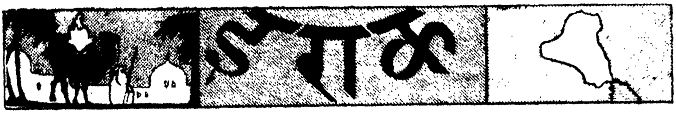


३४—बग़दाद का फलूजा पुल

अन्दर से कूफा-दरवाज़ा, बसरा-दरवाज़ा, खुरासान-दरवाज़ा और शाम (सिरिया)-दरवाज़ा होकर बाहर जाती थीं। शहर के बीच में बड़ी मस्जिद और मन्सूर का महल था। मन्सूर ने मरते समय बग़दाद को एक

अत्यन्त आलीशान नगर के रूप में छोड़ा। उसके उत्तराधिकारी खलीफा हारून अल् रशीद के समय में बग़दाद में अपार सम्पत्ति आ गई। यहां दूर दूर से द्रव्य आने लगा। खलीफ़ा विद्या-प्रेमी भी था। उसके दरबार में दूर दूर से विद्वान् आने लगे। उसके समय में कई ग्रन्थों का यूनानी और दूसरी भाषाओं से अरबी में अनुवाद हुआ। लेकिन खलीफा मुत्तसिम को बग़दाद में राज्य करने में कुछ कठिनाई जान पड़ी। उसने बग़-दाद से ७२ मील उत्तर-पूर्व की ओर दजला नदी के ही पूर्वी किनारे पर सामर्रा शहर बसाया और वहीं वह राजधानी ८३६ में उठा ले गया। यह तबदीली कुछ ही समय तक रही। ८६२ में बग़दाद फिर राजधानी हो गया। इसके बाद खलीफाओं की शक्ति घटने लगी। फिर भी साढ़े तीन सौ वर्ष तक बग़दाद व्यापार का केन्द्र रहा।

१२५८ में चिंगेज़ खां के लड़के हुलागू खां ने बग़दाद के चारों ओर घेरा डाला। ५० दिन के घेरे के बाद उसने बग़दाद पर अधिकार कर लिया। खलीफा और उसके बेटों को उसने क़ैद करके क़त्ल करवा



दिया। शहर लुट गया और शहर निवासियों को तरह तरह की पीड़ायें दी गईं। अन्त में बहुत से लोग मार डाले गये। एक तरह से बग़दाद शहर नष्ट हो गया। लगभग १०० वर्ष बाद शहर कुछ कुछ फिर बसा। लेकिन १४०१ में तैमूरलंग ने फिर इस पर अधिकार किया और कत्ल-आम हुआ। १४११ में बग़दाद पर कारा कुयुनली (काले तुर्कों) का अधिकार हुआ। कुछ समय बाद तुर्कों के दूसरे फिरके अककुयुनली (सफेद या गोरे तुर्कों) का अधिकार हुआ। इसके बाद अंग्रेज़ों के आने के पहले १९१७ तक बग़दाद पर तुर्कों का ही अधिकार रहा। वर्तमान बग़दाद इराक़ के नये राज्य की राजधानी है। दजला नदी यहां पर फरात से केवल २५ मील दूर रह जाती है। बसरा से यहां तक दजला में नावें बड़ी आसानी से चल सकती हैं। इसलिये राजधानी होने के अतिरिक्त बग़दाद इराक का स्वाभाविक व्यापार-केन्द्र है। यहां पर कई काफला मार्ग, रेल-मार्ग और हवाई-मार्ग मिलते हैं। इराक का सबसे बड़ा शहर (इसकी आबादी लगभग २॥ लाख है) बग़दाद ही है। इसके अधिकतर घर कच्चे हैं। कुछ ही सड़कें पक्की हैं। इन पर एक

ओर तेज मोटर चलते हैं दूसरी ओर लदे हुए सुस्त गधे और ऊंट चलते हैं। अक्सर भागों में गलियां तंग और मोड़दार हैं। शहर के कुछ भागों में विलायती ढंग के रेस्टारेन्ट, सजी हुई दुकानें और नाच तमाशे हैं।



३४—बग़दाद के पास एक गांव का दृश्य

माड ब्रिज के पास शाम को इतनी चहल पहल रहती है कि इसे अक्सर इराक़ का पेरिस कहते हैं। अधिकतर भागों में यहां की गरीबी और निरक्षरता का पता लगता



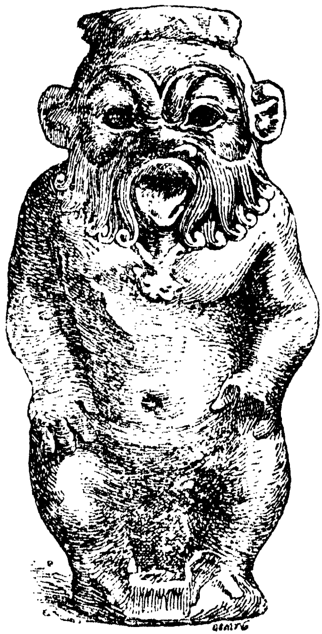
है। चिट्ठी लिखने वालों को इतनी अधिक आमदनी होती है कि सरकार उन पर टैक्स लगाती है। शहर में पानी के नल लगे हुये हैं। फिर भी पानी की कमी है। जलवायु इतनी खुश्क है कि बग़दाद में पानी बहाने के लिये नालियों की जरूरत नहीं पड़ती है।

दजला नदी यहां बहुत गहरी और तेज़ है। फिर भी गोल गोफा नावों को खड़े होकर अरबी मल्लाह चलाते मिलते हैं। इस समय भी इराक़ में कई पुरानी मस्जिदें देखने योग्य हैं। नये प्रबन्ध में यहाँ कई शिक्षा-केन्द्र और विदेशी दूतावासों के घर बढ़ गये हैं। यहां का अजायब घर नया होने पर भी देखने योग्य है।



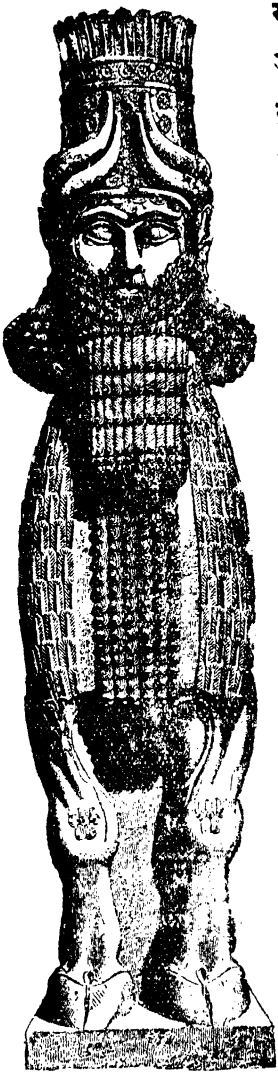
संक्षिप्त इतिहास

इराक़ के अत्यन्त प्राचीन इतिहास-काल को अक्सर बाबुल या बेबिलान-युग कहते हैं। लेकिन बहुत पुराने समय में बेबिलान एक बहुत ही छोटा और मामूली गांव था। उस समय सुमेर और अक्काद के राज्य यहाँ शासन करते थे। इनके अन्तर्गत कई नगर-राज्य थे। प्रत्येक नगर के पड़ोस वाले भाग का शासन उसी नगर द्वारा होता था। उर, एरिदू, लगाश, एरिच निप्पुर, किश, अगाद, इसीन, लर्सा आदि उस समय के प्रधान नगर थे। अब से लगभग ५००० वर्ष पहले सुमेर और अक्काद के राज्य आपस में मिल गये। संयुक्त राज्य के अत्यन्त प्रसिद्ध सम्राट सर्गन और नरम सीन थे।



३७—फोनेशियन लोगों की बनाई हुई मिट्टी की एक प्राचीन मूर्ति।

सुमेरियन लोगों की सभ्यता एक उच्चकोटि की

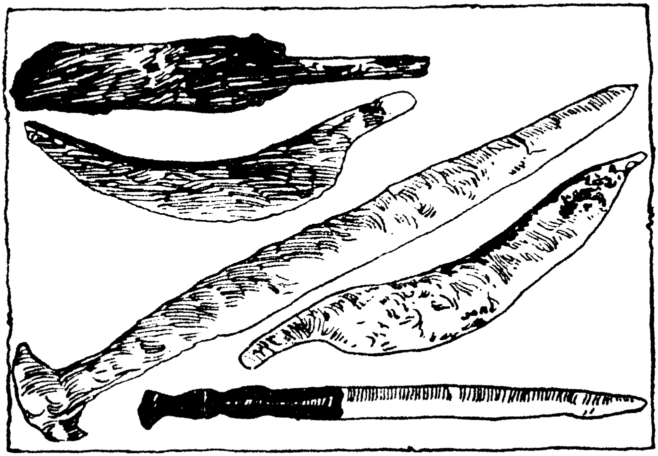


२८—दुरशरुकिन का पंख वाला वृषभ द्वारपाल

सभ्यता थी। उर की खुदाई में अब से ५००० वर्ष पुरानी जो सुन्दर कारीगरी की सोने की चीज़ें निकली हैं उनसे अधिक सुन्दर चीज़ें आजकल संसार का कोई सुनार नहीं बना सकता है। कुछ समय बाद नगरों में झगड़े होने लगे। ईसा से २५०० पूर्व हामूराबी ने बेबिलान को सबसे अधिक शक्तिशाली नगर बना दिया। बेबिलान में बहुत अच्छे कानून बने। सुमेरियन लोगों की चलाई हुई नुकीली (cuniform) लिपि दूर दूर तक फैल गई। हामूराबी के मरने पर उसके उत्तराधिकारी योग्य न निकले।

ईसा से पूर्व १७५० से ७५० वर्ष तक बेबिलान का लगातार ह्रास होता रहा। सिरिया के (हिटायट) लोग इधर बढ़ आये। इस बीच में २०० वर्ष (१३५० पूर्व से ११५० पूर्व) तक एसीरियन

राज्य की सैनिक शक्ति विशेष रूप से प्रबल रही। इनकी राजधानी असुर नगर में थी जो मोसूल के दक्षिण में था। इनका राज्य बहुत दूर तक बढ़ गया। बेबिलान पर भी एसीरिया का प्रभाव बढ़ गया। ईसा से ७५० वर्ष पूर्व

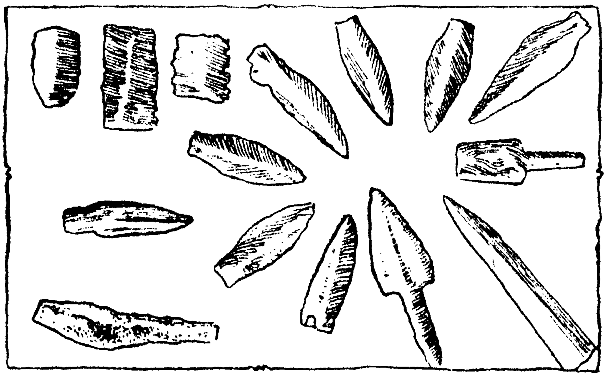


३१—कांसे के बने हुए कुछ पुराने शस्त्र (तलवार, भाला, बर्छी)

एसीरिया की राजधानी असुर से हटकर निनवा नगर में हो गई। निनवा का गौरव प्राचीन बेबिलान से कहीं अधिक बढ़ गया। अन्त में बेबिलान पर एसीरिया का अधिकार हो गया और हामूराबी का बनवाया हुआ बेबिलान नगर नष्ट कर डाला गया।



ईसा से ६०६ वर्ष पूर्व एसीरिया का शक्तिशाली राज्य भी टुकड़े टुकड़े हो गया। इस राज्य को नष्ट करने में दक्षिण के काल्ड या केल्डियन लोगों का हाथ था। फारस की खाड़ी से बढ़ते बढ़ते इन्होंने बेबिलान



४०—काँसे के बने हुए तीर के सिरे और पत्थर के हथियार

पर अधिकार कर लिया और अन्त में एसीरियन लोगों से मोर्चा लिया। केल्डियन लोगों ने लगभग ६७ वर्ष तक बेबिलान पर राज्य किया। इनके राजा ने बड़े बड़े आलीशान भवन बनवाये, उसी ने फिर से बेबिलान नगर को बनवाया। उसके समय के नये बने हुये बेबिलान नगर की शान निनवा से भी अधिक बढ़ गई।

उसने यरूशलम पर हमला किया और वह बहुत से यहूदियों को कैद कर लाया। जिस बेबिलान के भग्नावशेष आजकल देखने को मिलते हैं वह नबूकदनज़र का ही बनवाया हुआ था। हामूराबी के बनवाये हुये अधिक पुराने बेबिलान नगर के कुछ भी चिन्ह शेष नहीं हैं।

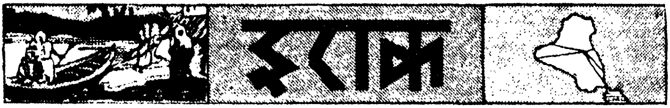




४२—प्राचीन भग्नावशेषों के कुछ चिन्ह

४१—कुछ प्राचीन मुहरें

बेबिलान को फिर से बनवाने के अतिरिक्त नबूकदनज़र ने ही बोरसीपा (बीर्स निमरूद) का मन्दिर बनवाया था। बीर्स नमरूद हिला से ७ मील और बेबिलान से ११ मील दूर है। उसने अपने बनवाये हुये मन्दिरों की



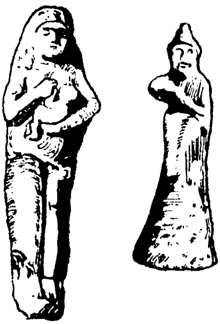
ईंटों पर कई तरह के लेख खुदवाये थे। एक लेख का अनुवाद इस प्रकार है :—"मैं बेबिलान का राजा नबूकदनजर हूँ। मैं बड़े देवताओं की पूजा करता हूँ। मैं अपने प्रभू मर्दूक के आदेशानुसार चलता हूँ। उसका बड़ा बेटा नबू मेरी सहायता करता है...... ।"

ईसा से ५३६ वर्ष पूर्व फारस के राजा सिरस के बेटे बेल्शा ज़ार ने बेबिलान की फौज को हराया और सिरस का बेबिलान पर अधिकार हो गया। फारस के राजा दारा ने एक ओर हिन्दुस्तान और दूसरी ओर फेरो (फराउन) की नहर (वर्तमान स्वेज नहर) के मार्ग से भूमध्य सागर के प्रदेश पर हमला किया। फारसी लोगों ने प्राचीन बेबिलान की मुकीली लिपि भी सीख ली थी। कई लेख तीन लिपियों में लिखे गये। इसी से प्राचीन लिपि को समझने में लोग समर्थ हो सके। एक बार फारस के राजा ने यूनानी फौज किराये पर बुलाई। जेनोफान की १५००० फौज यहां आई और बड़ी कठिनाई के साथ १०,००० फौज यूनान को वापिस लौट गई।

ईसा से ३३१ वर्ष पूर्व सिकन्दर (महान) ने फारस पर हमला किया। अर्बेला के पास ईरानियों की

हार हुई। कुछ ही समय में यूनानियों का ईरान, अफ़गानिस्तान और बेबिलान पर अधिकार हो गया।

सिकन्दर ने बेबिलान में ही अपनी राजधानी बनाई। उसके समय में दूर दूर के राजा यहां भेंट चढ़ाने आते थे। १३ वर्ष राज्य करने और हिन्दुस्तान (पंजाब) से



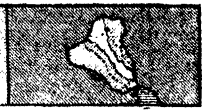


४४

४३—प्राचीन भग्नावशेषों के कुछ चिन्ह

लौटने के बाद वह यहीं बेबिलान ३३ वर्ष की उम्र में मर गया। उसके उत्तराधिकारियों में झगड़ा हुआ। उसके एक सेनापति सिल्यूकस ने इराक़ पर अधिकार कर लिया और वर्तमान बग़दाद से २० मील नीचे सिल्यू सिया में अपनी राजधानी बनाई। सिल्यूकस के उत्तराधिकारियों ने लगभग १७५ वर्ष तक राज्य किया।





इसके बाद फारस की ओर से आने वाले पार्थ या पार्थियन लोगों ने यहां अपना अधिकार जमाया और दजला के किनारे टेसीफान (सिल्यूसिया के ठीक सामने) में अपनी राजधानी बनाई। यूनानी उपनिवेश यहां बने रहे। इसी समय सिरिया में रोमन लोगों का राज्य हो गया। उनके सम्राट ट्राजन ने उत्तरी इराक पर भी हमला किया। उसके लौटने पर फिर पार्थियन लोगों का राज्य हो गया।

२२६ ईसवी में फारस के सासनी (Sassani) वंश ने पार्थियन लोगों को हराकर यहां अपना अधिकार कर लिया। टेसीफान का प्रसिद्ध महराब इसी समय बना। सासनी लोगों ने ३२६ ईस्वी तक यहां राज्य किया।

इसके बाद यहां इस्लामी साम्राज्य फैला। इस्लाम धर्म के जन्मदाता हजरत मुहम्मद मक्का नगर में ५७० ईस्वी में पैदा हुए। ६२८ में उन्होंने अपने धर्म और राजनैतिक प्रभाव को बढ़ाने की योजना तयार की। ६३२ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन उनके उत्तराधिकारियों ने इस्लाम धर्म और इस्लामी राज्य को तेजी के साथ बढ़ाया। ६३५ ई० में रोमन लोग दमश्क

से निकाल दिये गये। ६३६ ईस्वी में इस्लामी फौजों ने कूफा से १५ मील पश्चिम में कदीसिया में सासनी लोगों को हराया। ६३७ में मुसलमानों ने सासनी लोगों की राजधानी टेसीफान पर अधिकार कर लिया और कूफा, वसीत और बसरा में उन्होंने अपनी जड़ जमा ली। इसके बाद ही अरब से इराक में अरबी लोग फैलने लगे।

इस्लामी राज्य को बढ़ाने का काम खलीफाओं ने किया। हज़रत मुहम्मद के बाद इस्लाम धर्म का नेता और इस्लामी फौजों का सेनापति खलीफा ही होता था। पहले तीन खलीफा हज़रत मुहम्मद के ही साथी थे उन्होंने २४ वर्ष तक राज्य किया चौथे खलीफा अली हुए। अली हज़रत मुहम्मद के चचेरे भाई थे। हज़रत मुहम्मद की लड़की फातिमा का ब्याह अली से ही हुआ था। इस प्रकार अली उनके दामाद भी थे। अली के समय में इस्लामी राज्य ट्यूनिस (उत्तरी अफ्रीका) से अफ़गानिस्तान तक फैल गया था। उनके समय में कई विद्रोह उठे। उनको दबाने का काम अली को ही करना पड़ा। उन्होंने इस बड़े राज्य की राजधानी मदीना से हटाकर फरात के किनारे कूफा में बनाई।

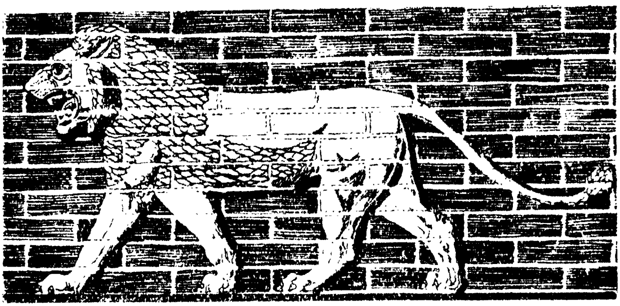


अली ने केवल ५ वर्ष तक राज्य कर पाया। एक दिन कूफा की मस्जिद में वे नमाज़ पढ़ रहे थे। उनके एक विद्रोही ने इसी समय उन्हें मार डाला।

इसी समय ओमय्य के एक वंशज ने दमश्क में अपने को खलीफा घोषित किया। ओमय्य दूर के रिश्ते से हज़रत मुहम्मद का चचेरा भाई लगता था। ओमय्यद लोगों का इराक पर अधिकार हो गया और दमश्क राजधानी बनी।

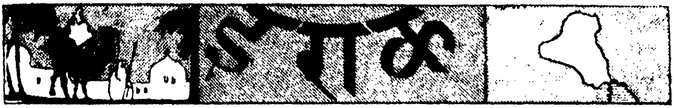
लेकिन अली की हत्या से इरानी और इराकी (अरबी) उनके खिलाफ थे। इस प्रकार शिया मत की बुनियाद पड़ी। शिया लोग अली-घराने के लोगों को खलीफा बनने के योग्य समझते थे। १६ वर्ष बाद कूफा के (शिया) लोगों ने अली के लड़के हुसेन को (जो इस समय मदीना में था) इराक में खलीफा बनने के लिये बुलाया। हुसेन ने इस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया। उसने कूफा के लिये प्रस्थान किया। लेकिन ओमय्यद की फौजों ने कर्बला के पास हुसेन को तड़पा तड़पा कर मार डाला। इससे शिया लोग और भी अधिक नाराज़ हो गये। ६० वर्ष बाद अब्बासी लोगों

से मिलकर उन्होंने ओमय्यद लोगों को परास्त किया। लेकिन शिया लोग अली के वंशज को फिर भी खलीफा न बना सके। अब्बासी सरदार ने अपने को खलीफा घोषित कर दिया। अब्बास दूर के रिश्ते से हज़रत मुहम्मद का चचा लगता था। उसके खानदानी



४५—पुरानी सड़क पर बना हुआ सिंह

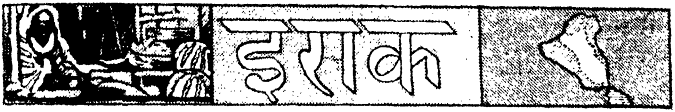
लोग अब्बासी कहलाते हैं। जब अब्बासी खलीफा हुआ तो राजधानी दमश्क से उठकर अनबार (फलूजा के पास फरात नदी के किनारे पर) में हो गई। लेकिन दूसरे अब्बासी खलीफा मन्सूर ने बग़दाद में अपनी राजधानी बनाई। अब्बासी खलीफाओं ने बग़दाद को अपने समय में बड़ा आलीशान नगर बना दिया।



केवल कुछ समय (५६ वर्ष) के लिये ८३६ ईसवी में सामर्रा राजधानी बनी। वैसे कई सदी तक बग़दाद ही राजधानी रहा। १२५८ में चिंगेज़ खां के लड़के हुलागू खां ने बग़दाद पर हमला किया। उसने शहर को उजाड़ा और अब्बासी खलीफा को नष्ट कर दिया। इसके बाद ३०० वर्ष तक इराक़ में बड़ी गड़बड़ी रही। १५३४ ईस्वी में यहां (इराक़ में) तुर्क लोगों का राज्य हो गया। तुर्की खलीफा की राजधानी तो कुस्तुन्तुनिया में रही लेकिन तुर्की प्रान्तीय गवर्नर की राजधानी बग़दाद में रही। पहले तुर्की का यहां बड़ा रोब था। १६१२ में इटली और बलकान युद्ध में तुर्कों की हार से अरबी लोग साजिश करने लगे। १६१४ में बड़ी लड़ाई आरम्भ हो गई। तुर्की ने जर्मनी का साथ दिया। सारे मुसलमानों को अपनी तरफ मिलाने के लिये जर्मनी ने खलीफा से जिहाद (पवित्र लड़ाई) की घोषणा करवाई लेकिन अंग्रेज़ों ने अरबों को आजादी का लालच देकर अपनी ओर फोड़ लिया। इराक़ तुर्की से दूर भी पड़ता था। रेगिस्तानी मार्ग से फौज और रसद भेजने में कठिनाई होती थी। इधर फारस की खाड़ी के मार्ग से

हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ी फौजें बड़ी आसानी से पहुंच सकती थीं। कुछ ही समय में बसरा और समीप वाले भागों में अँग्रेजी अधिकार हो गया। कूत में अंग्रेज़ों की हार से कुछ समय के लिये लड़ाई में शिथिलिता आ गई। अन्त में बगदाद पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया। बड़ी लड़ाई में टर्कों की हार हुई। उसके बाहरी प्रान्त छिन गये। इराक पर शासन करने के लिये लीग (राष्ट्र संघ) की ओर से अंग्रेज़ों को फर्मान (मैंडेट) मिल गया।

लेकिन अंग्रेजों ने लड़ाई के समय के वादों को भुला दिया। इससे अरबों में घोर असन्तोष फैला। १६२० में उन्होंने विद्रोह का झंडा उठाया और अंग्रेजों की देखभाल में यहाँ अमीर फैसल का राज्य हो गया। लीग का शासन उठ गया। फैसल के बाद उसका बेटा ग़ाज़ी राजा हुआ। इसी वर्ष ग़ाज़ी के मरने पर उसका छोटा बेटा इराक़ का राजा हुआ। पर वास्तव में इराक़ ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग है।



असीरियन साम्राज्य

अगर फरात के किनारे पर स्थित ईस या हित नगर से दजला के किनारे वाले समारा नगर तक एक रेखा खींची जावे तो यह रेखा इराक के कछारी मैदान की उत्तरी सीमा बनावेगी ! दजला और फरात नदियों का बनाया हुआ कछारी मैदान यहीं से आरम्भ होता है। इस के आगे उत्तर का मैदान न केवल ऊंचा वरन् उत्तर के सिरिया के रेगिस्तान की तरह खुश्क और वीरान है। यही रेखा प्राचीन समय में दक्षिण के बेबिलोनियन राज्य की प्राकृतिक सीमा बनाती थी। दक्षिण की ओर घनी आबादी होने से और बाहरी हमलों से बचाने के लिये अब से ४००० वर्ष पहले कुछ लोग उत्तर की ओर बढ़ आये। इनका राजा राज्य करने के अतिरिक्त पुरोहित या पुजारी का भी काम करता था। यह लोग देवताओं को मानते थे। इसलिये यह असुर कहलाते थे। पुराने समय में देवता को असुर (पीछे से सुर कहने लगे) कहते थे। इसी से यह लोग भी असुर कहलाने लगे। इसी से इनका देश असुरिया कहलाने लगा। इसी से बिगड़ कर असिरिया हो गया। इनका यह देश

आर्मेनिया के पठार से कछारी मैदान तक फैला हुआ था। इसका कुछ भाग दजला और फरात के बीच में था। कुछ इनके बाहर फैला हुआ था। पहले यहां अच्छी वर्षा होती थी जैसा इनके अक्काद (सजल) शब्द से ही प्रगट है। इसी भाग में शक्तिशाली असीरियन साम्राज्य का जन्म हुआ। यह प्रदेश सैनिक दृष्टि से अपनी रक्षा के लिये बहुत अच्छा था। अपने पड़ोसियों से छोटी छोटी लड़ाइयां लड़कर इन्होंने अपनी शक्ति बढ़ाली। आरम्भ में इनका देश ३५० मील लम्बा और लग-



४६



४७

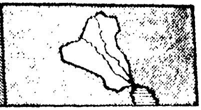
भग ३०० मील चौड़ा था। इसका क्षेत्रफल ७५००० वर्ग-मील था।

असीरियन लोग कई देवताओं को मानते थे। इनके एक शहर का नाम था अर्बेला (अर्ब-इलू) या चार देवताओं का शहर। इनकी राजधानी निनवा में भी कई मन्दिर थे। इनके राजा विजयाकांक्षी कई देवताओं के चिन्ह पहना करते थे। पर वे असुर को

सर्वोपरि मानते थे। सभी कामों में वे उसकी उपासना किया करते थे। राजा का झंडा पक्षी की पूंछ के आकार का होता था। असीरियन लोग मरा सागर और उर्मिया झील से भलीभांति परिचित थे। वे कुर्दिस्तान को नैरी कहते थे। असीरिया के राजाओं ने कई बार नैरी पर हमला किया था। इनके प्रधान शहर असुर में दूर दूर से भेंटें और कर आते थे। असुरियन लोग रथ और घोड़ों पर सवार होकर लड़ते थे। वे तीर कमान और भाला चलाते थे। उनके एक राजा को अभिमान था कि मैंने ४२ देशों को जीता और उनके लोगों को एक भाषा बुलाई। अवकाश के समय वहां के लोग रथ बनाते थे। उसी राजा का कहना है कि मैं ने पहले से कहीं अधिक रथ और जुए बनवाये इससे देश को शक्ति बढ़ गई। मैंने बहुत से घोड़े बढ़ा दिये। राज्य भर में अन्न की बखारी (अन्नागार) भर गये। देवताओं को बलि चढ़ाने के लिये जंगली सुअर और हिरणों को लाकर बाड़ों में मैंने इस प्रकार भर दिया जैसे भेड़ें भरी हों। मैंने जगह जगह बगीचे लगवाये। राजा सिंहों का शिकार करता था।



इराक



असीरियन राजाओं ने बड़े बड़े आलीशान महल बनवाये। सर्गन नामी प्रसिद्ध असीरियन राजा ने जब अपना शहर बसाया तो उसने शहर की जमीन के लिये प्रजा को पूरा मूल्य दिया जो मूल्य नहीं चाहते थे उनको राजा ने जमीन के बदले जमीन दिया। शहर बसाने के पहले देव मन्दिरों की स्थापना की गई। फिर महल बने। महल हाथी दांत, देवदार और खजूर की लकड़ी तथा कांसे से सजाये गये। शुभ महूर्त में नींव डाली गई। नींव डालने और ईंट बनाने आदि के सभी काम प्रार्थनापूर्वक आरम्भ किये गये। शहर में जड़े हुए राजमार्ग थे। शहर में आठ बड़े द्वार थे जिनका नाम प्रधान देवताओं के नाम के अनुसार रक्खा गया था। पूर्वी द्वारों का नाम शमश और रमन था। उत्तर की ओर वाले द्वार बेल और बेलित कहलाते थे। पश्चिम वाले अनु और इश्तर और दक्षिण की ओर वाले इया और देवयानी कहलाते थे। दीवारों का असुर और खाइयों का निनेव नाम रक्खा गया। अपने समय में यह द्वार बड़े सुशोभित थे। उनमें बढ़िया कामदार और पंख वाले विशाल बैलों

की मूर्तियां जड़ी थीं। कहीं कहीं सिंह और दूसरी मूर्तियां थीं।

जब असुर (असीरियन) राजाओं ने भूमध्य सागर के तट पर बसे हुए फोनीशियन लोगों को जीता तो उन की सहायता से उन्होंने निनवा में बड़ी बड़ी नावें बनवाईं। दजला और फरात के बीच में नहर बनाई जो सिंचाई और व्यापार के काम आती थी।

असीरिया के सेनायेरिब सम्राट ने निनवा नगर को चमका दिया। नगर वासियों को पानी का कष्ट था। उसने खुजुर नाम की छोटी नदी को रोक कर १६ नहरें निकलवा दीं। उस के समय में नगर बहुत बढ़ गया, सड़कें भी चौड़ी हो गईं।

आगे चलकर असीरिया के राजा कुछ कमजोर पड़ने लगे। इसी समय पूर्व (ईरान) की ओर से आने वाले मीडी (मिडियन) लोगों के प्रबल हमले होने लगे। कुछ ही समय में असीरिया का राज्य नष्ट हो गया और उसकी जगह पर मिडिया का राज्य हो गया।



केल्डिया

अब से कई हज़ार वर्ष पहले इराक में दूसरे लोग रहते थे। उन दिनों समुद्र के समीप वाला निचला भाग शुमीर, शीनार या सुमेर कहलाता था। ऊपर की ओर वाला कुछ ऊंचा भाग अक्काद् कहलाता था। आगे चल कर यही निचला भाग केल्डिया और ऊपरी भाग बेबिलोनिया कहलाने लगा।

कई सदियों तक केल्डिया के लोग बड़े सुख से रहे। वर्षा उनके समय में भी यहां नहीं होती थी। लेकिन नदियों के किनारे गेहूँ जंगली उगता था। बोने पर फसल और अधिक अच्छी होती थी। ताड़ और छुहारे से उन्हें फल, लकड़ी और दूसरी तरह की चीज़ें मिलती थीं। इस ओर पत्थर और लकड़ी की कमी थी इसलिये केल्डिया के लोग पत्थर और लकड़ी को बाहर से मंगाते थे। भारी सामान को बहा लाने के लिये वे मश्कों को भर कर नीचे अटका देते थे। फिर भी यह लोग बड़े बड़े महल और मन्दिर बनवाते थे। इनके मन्दिर जिग्गुरत कहलाते थे। वे कई मंजिल ऊंचे होते थे। निचला भाग

बहुत ऊँचा होता था। ऊपर के भाग छोटे होते जाते थे। जिग्गुरत शब्द का अर्थ है पर्वतशिखर या



४८—तांबे का बना हुआ बैल का यह सिर उर के भग्नावशेषों में पाया गया है

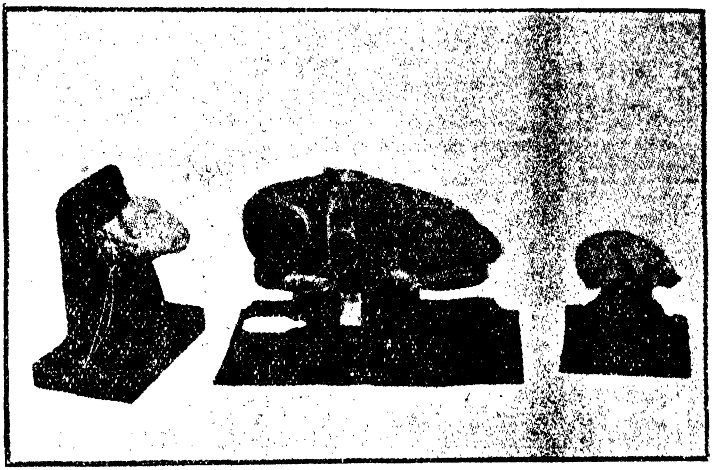
पहाड़ की चोटी। सचमुच जिग्गुरत इतने ऊंचे होते थे कि दूर से पहाड़ मालूम होते थे। प्रत्येक जिग्गुरत की



४६—उर के खंडहरों में पाया गया तांबे का बना हुआ दैत्य का सिर

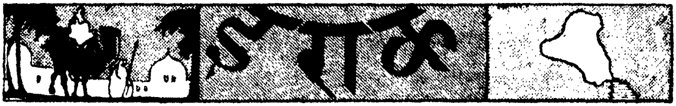
उंचाई १५६ फुट होती थी। केल्डिया के रेगिस्तानी देश

में आकाश सदा निर्मल रहता था। चन्द्रमा और तारागण बहुत साफ दिखाई देते थे। इसी से यहां के लोग पुराने समय में ज्योतिष विद्या में निपुण हो गये थे। वे ग्रहों को अलग अलग रंगों से मन्दिरों में दिखलाते थे। सूर्यशम्स



२०—उर के खंडहरों में मिले हुये पत्थर के कुछ पदार्थ

को वे सुनहले रंग मे रंगते थे। चन्द्रमा या तारा चांदी का था। शनि (अदुर) काला था। बृहस्पति (मदक) मङ्गल (नरगल) लाल था। शुक्र फीके पीले रंग का था। बुध (नबु) नीले रंग से दिखलाया जाता था।



केल्डिया में नदियों के पड़ोस में मिट्टी बहुत अच्छी मिलती थी। इसी से वे ईंटें बनाते थे, अक्सर वे कच्ची मिट्टी पर नुकीले अक्षर भी खुरच कर बना लेते थे। पकाने पर वे अक्षर और भी साफ निकल आते थे। केल्डिया के लोग इसी प्रकार की मिट्टी की पुस्तकों को काम में लाते थे।

अपने समय में केल्डिया के लोगों ने व्यापार और कलाकौशल में बड़ी उन्नति की। फिर ऐसा हुआ कि उनपर बाहरी हमले हुए। वे नष्ट हो गये। उनकी सभ्यता मिट गई। सदियों तक लोगों को पता ही न चला कि इराक में कभी केल्डियन लोग रहते थे। उनकी बनाई हुई नहरें भर गईं। ऊंचे ऊंचे जिग्गुरत बालू में दब गये। जहां आबादी थी और थोड़ी थोड़ी दूर पर शहर थे वहां केवल टीले शेष रह गये। इन टीलों के पड़ोस में कोई नहीं रहता था, कभी कभी बद्दू अरब अपने डेरे अवश्य लगा लेते थे।

अब से १०० वर्ष पहले लोगों को पुरानी बातों के जानने का शौक बढ़ा। टीलों की खुदाई शुरू हुई। उनमें से अजब तरह की चीजें निकलीं। अरबी मजदूर डरे।

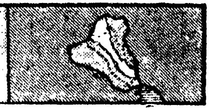
उन्होंने अपने मुल्लाओं को खबर दी। अज्ञान मुल्लाओं ने इन्हें कुफ्र करार दिया। कुछ अमूल्य चीजें तोड़ डाली गईं। फिर भी खुदाई का काम जारी रहा। अन्त में पुराने लेखों को पढ़ने की कुञ्जी मिल गई। इससे केल्डिया के इतिहास की बहुत सी बातें संसार के सामने फिर प्रगट हो गईं।

प्राचीन उर और दूसरे नगरों में जो खुदाई हुई उसकी कुछ सी चीजें बगदाद के अजायब घर में देखी जा सकती हैं। बहुत सी चीजें लन्दन के ब्रिटिश म्यूजियम में पहुँच गई हैं। कुछ पेरिस और दूसरे अजायबघर में भी देखी जा सकती हैं।





इराक

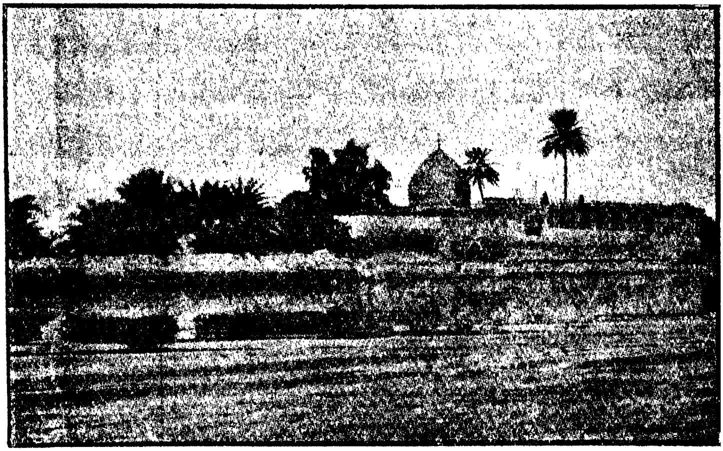


बड़ी लड़ाई

१९१४ में बड़ी लड़ाई छिड़ गई। उस समय इराक का देश तुर्की साम्राज्य में शामिल था। टर्की ने जर्मनी का साथ दिया और अंग्रेजों से दुश्मनी मोल ली। जर्मनी ने ताड़ लिया था कि ब्रिटेन की उन्नति उसके साम्राज्य पर निर्भर है। साम्राज्य को और देशों की अपेक्षा ब्रिटेन को हिन्दुस्तान से अधिक लाभ होता है। अतः ब्रिटेन को नीचा दिखाने के लिये जर्मनी ने हिन्दुस्तान पर हमला करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य से बगदाद रेलवे की योजना तयार की। इस प्रकार हिन्दुस्तान की फौजी सीमा उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त से उठकर फारस की खाड़ी और भूमध्य सागर तक बढ़ गई।

फारस की खाड़ी में जर्मनी या उसके मित्र टर्की की फौजों को पैर रखने की जगह न मिले इसलिये ब्रिटेन ने दक्षिणी ईरान पर अपना प्रभुत्व बढ़ा लिया। फारस की खाड़ी के पास बसे हुये फिरकों को भी ब्रिटेन ने अपनी ओर मिला लिया। मेसोपोटामिया की लड़ाई का भार भारत की सरकार के ऊपर आया।

लड़ाई छिड़ने पर टर्की के खलीफा ने जहाद का एलान किया और संसार के मुसलमानों को ब्रिटेन के विरुद्ध हथियार उठाने का आदेश दिया। हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर इस धार्मिक युद्ध का कोई असर न पड़ा। अफगानिस्तान के अमीर ने भी टर्की का साथ न दिया। इससे चिढ़ कर टर्की के अनवर पाशा ने अमीर को



४२—अज़रा का मकबरा

चूड़ियों की भेंट भेजी। इस अपमान से नाराज होकर अफगानिस्तान के अमीर ने और भी अधिक वफादारी के साथ अँग्रेज़ों का साथ दिया। कुछ अरबी लोगों को भी अंग्रेजों ने अपनी ओर फोड़ लिया।

फिर भी जर्मन हमले का डर दूर न हुआ। सीमा

प्रान्तीय फौज की टुकड़ी योरुपीय युद्धक्षेत्र में जर्मनी से जा मिली थी। इस टुकड़ी को जर्मनी प्रदर्शनार्थ स्थल मार्ग से घर भेजा।

हिन्दुस्तान से जो फौज मेसोपोटामिया को भेजी गई उसको विचित्र सफलता मिली। यह प्रदेश टर्की से दूर पड़ता था। अरबों की नीति थी "कोऊ नृप होउ हमें का हानी" इस तरह इस हिन्दुस्तानी फौज ने बड़ी आसानी से १९१४ के २३ नवम्बर को बसरा पर अधिकार कर लिया। ९ दिसम्बर को कुर्ना जीत लिया गया। इससे ब्रिटेन का अधिकार दजला के निचले भाग पर हो गया। तुर्कों का पीछा करने के लिये हिन्दुस्तानी फौज को देश के भीतर बढ़ना पड़ा। ऐसा मालूम होता था कि बिना बगदाद जीते मेसोपोटामिया की लड़ाई का अन्त न होगा। लेकिन देश के अधिक भीतर बढ़ने में कठिनाई थी। जो बाढ़ फरवरी महीने से आरम्भ होती है वह दजला नदी के दोनों ओर गहरे और दलदली अनूप बना देती है। नदी से निकलने वाली पुराने समय की नहरें और धारायें भी पानी से भर जाती हैं और आने जाने में बाधा डालती हैं और धूप इतनी तेज होती है कि सूर्य निकलते ही तापक्रम ११० फारेनहाइट हो जाता है। दोपहर का तापक्रम १२० अंश हो जाता है। रेगिस्तानी प्रदेश में छाया का

नाम नहीं है। पीली बलुआ मिट्टी और नीले पानी के पड़ोस में विचित्र चमक और मरीचिका उठती है। इस प्रदेश में आने जाने का एक मात्र मार्ग टेढ़ी चाल से बहने वाली नदी थी। नदी में बाढ़ आने और पानी घटने का कोई समय निश्चित नहीं है। इस के दोनों ओर चपटा मैदान है जिसमें कहीं (नदी के पास) दल-दल है, कहीं (नदी से दूर) रेतीले टीले हैं। इस ओर प्रायः असभ्य बद्दू हैं। वे बड़े निर्दयी और विश्वासघाती होते हैं। वे विजयी फौज का स्वागत करते और हारकर पीछे हटने वाली फौज को लाने में लग जाते थे। जिस दिन तुर्को और अंग्रेजी फौजों में लड़ाई होती उस दिन वे अपने डेरों में सफेद झंडा लगा लेते लेकिन वे फौज के पृष्ठ भाग में जो माल पाते उसे चुरा ले जाते और घायल सिपाहियों को भी लूटने में नहीं हिचकिचाते थे। वे तुर्की और अंग्रेजी दोनों सिपाहियों को बिना किसी पक्षपात के लूट लेते थे। फौज के बड़े भाग के सामने अटल राजभक्ति की दुहाई देते थे। इसी प्रदेश में मेसोपोटामिया की लड़ाई छिड़ी। ३१ मई को पता लगा कि तुर्की फौज कुर्ना के पास पड़ी हुई है। उस समय ऐसा अचानक छापा मारा गया कि उसे (तुर्की फौज को) बुरी तरह भागना पड़ा। पहली जून को हिन्दुस्तानी फौज आगे बढ़ कर अजरा मकबरे के उत्तर में पहुँच

गई। तीसरी जून को कुर्ना से ७५ मील दूर अमारा पर अधिकार कर लिया गया। यहां बहुत से तुर्की सिपाही कैद कर लिये गये। कुछ पड़ोस के दलदलों की ओर भाग गये। अमारा एक प्रसिद्ध स्थान है यहां की एक टोली १०० मील तक रेगिस्तानी सड़क अहवाज नगर को जाती है जो कारून नदी के किनारे बसा हुआ है। अमारा पर अंग्रेजी अधिकार हो जाने से अहवाज ज़िले में भी शान्ति रक्खी जा सकती थी और उस एंगलो-पर्शियन आयल कम्पिनी की पाइप लाइन की रक्षा की जा सकती थी। तेल की यह पाइप लाइन अहवाज होकर गुजरती थी। अमारा पर अंग्रेजों का अधिकार हो जाने पर तुर्की सेनापति नूरुद्दीन पाशा अपनी बचाई हुई फौज लेकर कुतअलअमारा पहुंचा जो अमारा से १५० मील दूर है। कूत-अल-अमारा से पास ही दजला नदी से शत्तल-है नाम की एक शाखा फूटती है। जो नसीरिया के पास फरात नदी में मिल जाती है। नसीरिया नगर बसरा से लगभग १०० मील उत्तर-पूर्व की ओर है।

अंग्रेजी फौज ने नसीरिया पर अधिकार कर लिया। कुर्ना से आने वाली इस फौज को रास्ते में कहीं दलदल और कहीं झील और नाले पार करने पड़े। नसीरिया की लड़ाई में भी अंग्रेजी सेना की पूरी जीत हुई।

७०० तुर्की सिपाही कैद कर लिये गये। डेढ़ हजार से ऊपर घायल हुए या मारे गये। हारी हुई तुर्की फौज शत्तल-है के मार्ग से कूत-अल अमारा को चली गई।

इस प्रकार कूत-अल-अमारा अगली लड़ाई का प्रधान केन्द्र बन गया। कूत-अल अमारा पर चढ़ाई करने के लिये अंग्रेज़ी जनरल टाउन्सेंड की फौज दजला नदी के किनारे किनारे आगे बढ़ी। रास्ता बड़ा कठिन था। नालों पर पुल बनाने पड़ते थे। और दलदलों का चक्कर काट कर पार करना पड़ता था। बीच में तुर्की फौज से कोई मुठभेड़ न हुई। लगभग १०,००० तुर्की फौज कूत-अल्-अमारा के पास लड़ने की तयारी में लगी थी। तीन महीने के बाद २५ सितम्बर को अंग्रेजी फौज फिर तुर्की फौज के सामने आ गई। नदी के दाहिने किनारे पर तुर्की फौज का दाहिना पत्त था। इसके सामने २० फुट ऊँचा नहर का बांध था। बायें किनारे पर तुर्की फौज का केन्द्र और वाम पत्त था अंग्रेजी नावों को आगे बढ़ने से रोकने के लिये नदी में नावें डुबा कर उसे उथला कर दिया गया था। नदी तट से दो मील लम्बी खाइयां दलदलों तक बना दी गई थीं। दलदल भी एक दूसरे से जोड़ दिये गये थे। बायें पत्त की रत्ता इन्हीं दलदलों से हो रही थी। इस लड़ाई में पूना ब्रिगेड और दूसरे सिपाहियों ने बड़ी वीरता दिखलाई। आरम्भ में कुछ

सफलता भी मिली। लेकिन आगे चलकर यहां अंग्रेजों की बुरी तरह से हार हुई। कुछ समय तक साम्राज्य भर में इस हार से तहलका मच गया। सब लोग विजय के लिये चिल्लाने लगे। १९१७ में जनरल माड अधिक तयारी के साथ एक बड़ी फौज ले आया। कूत फिर ले लिया गया। कुछ ही समय में इस फौज ने बग़दाद पर भी अधिकार कर लिया। इससे पिछली हार का कलंक धुल गया। आगे चल कर टर्की को दूसरे युद्ध क्षेत्रों में भी हार माननी पड़ी। और इराक़ में सब कहीं ब्रिटिश प्रभुत्व हो गया।



४३

देश दर्शन

मेरी विदेश-यात्रा

[१]

११ मई बृहस्पतिवार को रात के ११ बजे की गाड़ी से मैंने कराची के लिए प्रस्थान किया। लखनऊ में लाहौर एक्सप्रेस पर सवार हुआ। यह गाड़ी १½ घंटे की देरी से चली। डर था कि शायद लाहौर में कराची मेल न मिल सके। लेकिन किसी तरह से मेल मिल गया। सहारनपुर से इस गाड़ी में इतनी भीड़ थी कि मुश्किल से बैठने को जगह मिली।

कराची मेल में साधारण भीड़ थी। लाहौर के लम्बे रास्ते से आने के कारण १ रु० ८ आना और देना पड़ा। इस तरह इलाहाबाद से कराची को तीसरे दर्जे का टिकट १८ रु० २ आने में मिला। कराची मेल ठीक साढ़े आठ बजे कराची पहुँचा।

यहाँ से बन्दरगाह के लिये एक मोटर १।।) में किया। डाक्टरी और पुलिस की रस्म अदा करने के बाद अन्त में ३३) रु० में बसरा के लिये टिकट मिल गया।

१४ तारीख रविवार को सबेरे ठीक १० बजे जहाज चल दिया। मातृभूमि को छोड़ते हुए विचित्र भाव मन में पैदा हो रहे थे। कुछ दूर तक कराची के पड़ोस की पोली पहाड़ियां नजर आती रहीं। फिर स्थल एकदम ओझल हो गया। दूसरे दिन कभी कभी बलोचिस्तान का वीरान तट दिखाई देता था। तीसरे दिन सबेरे ही अरब की नंगी पहाड़ियां मिलीं। इस के आगे फारस की खाड़ी का जल बहुत शान्त था। बीच बीच में उजाड़ चट्टानों के द्वीप मिलते जाते थे। अरब की चट्टानों पर वनस्पति का नाम न था। ऊपर से उनका रंग कुछ धुँधला था। लेकिन टूटे हुए सपाट किनारे पजाहे की तरह गेरुआ रंग के थे। यहां

अक्सर सफेद बादबान वाली नावें, मछलियां, पीले सांप और मच्छीखोर चिड़ियां नजर आती थीं।

१७ मई बुधवार के दोपहर को स्टीमर बूशहर पहुँचा। खाड़ी में पानी उथला होने के कारण जहाज किनारे से दो तीन मील की दूरी पर ठहरा। पर शहर के कुछ सफेद चपटी छतवाले मकान नजर आ रहे थे। बन्दरगाह से तीन स्टीम नावें (लांच) आईं। एक नीली वर्दी वाली पुलिस की नाव थी। इनकी पोशाक अंग्रेज़ी थी। केवल टोपी गोल थी। इस टोपी के आगे कुछ भाग निकला हुआ था। लहरों में छोटी नावों के ठहरने में कठिनाई पड़ती थी। सामान और मुसाफिरों के उतारने के लिये सीढ़ियां लटकाई गईं। केवल १२ मुसाफिरों और डाक को उतारने और ३ मुसाफिरों और कुछ सामान को लेने में दो घंटे लग गये। फारसी मांझी टूटी फूटी हिन्दी बोल लेते थे। अफसर फारसी और अँग्रेज़ी बोलते थे। २ बजे जहाज़ फिर चल पड़ा।

इस ओर टिटिहरी के समान चिड़ियां बड़ी मजबूत होती हैं। मछलियों का शिकार करने के लिये उनके झुण्ड ऐसी जगह मँडराते हैं जहां से तट बिलकुल नज़र नहीं आता है। कुछ बड़ी बड़ी मछलियां एक आध मील तक जहाज़ के आगे दौड़ लगाती चलती हैं।

१८ मई को अँधेरे में ही शत्तल अरब की रोशनी दिखाई दी। इसके बाद खाड़ी पीछे छूट गई। जहाज़ नदी में चलने लगा। नदी का पानी गंगा की तरह कुछ मटीला और सफेद है। नदी अधिक चौड़ी नहीं है। किनारे नीचे हैं। पानी और छुहारों के बगीचों के बीच में कुछ ही गज़ का फासला है। बगीचों के किनारे अक्सर एक गज ऊँची कच्ची दीवार है। थोड़ी थोड़ी दूर पर बगीचों को सींचने के लिये नदी से नाली गई है। इन बगीचों की चौड़ाई बहुत नहीं है। इनके दूसरी ओर उजाड़ रेगिस्तान हैं। इन्हीं बगीचों के बीच में कहीं चपटी छतवाले कच्चे मकान हैं। कहीं वे छुहारे की पत्तियों से छाये हुए हैं। इनके सिरे पर कभी

कभी एक लम्बी तंग लकड़ी की नाव बँधी रहती है। कहीं लोग छुहारों की छाया में बैठ कर मछली मारते हैं।

आबदान में सिर्फ डाक उतारी चढ़ाई गई। यह नगर नदी के बायें किनारे पर बन गया है। यहां पहले बहुत कम झोपड़ियां थीं। पर आजकल नदी के किनारे मीलों तक इसकी जेट्टी हैं। चौड़े हवादार मकानों के बीच में पक्की सड़कें हैं जिन पर मोटर दौड़ते हैं। नदी में कई तेल के स्टीमर खड़े हैं। यहीं एंग्लोपर्शियन आयल कम्पनी का दफ़्तर है। रात को बिजली की रोशनी होती है। इसकी आबादी लगभग १ लाख है। आगे चलकर यह शहर और भी अधिक बढ़ जायगा। दूर से यहां चिमनियों का जाल सा दिखाई देता है। इसके ऊपरी सिरे पर ग़रीब लोगों की झोपड़ियां और बाज़ार है। इसे यहां के लोग रिज़ाशाह का बाज़ार कहते हैं। एक कोने में बग़ीचे के सिरे पर घुड़सवार रिज़ाशाह की स्टेचू (मूर्ति) काले पत्थर की बनी हुई है। दूसरे किनारे पर एक दम शान्त बग़ीचे और चपटी छतवाले कच्चे घर हैं। थोड़ी देर बाद जहाज़ मोहम्मरा पहुँचा। नदी के बीच में जहाज़ का लंगर डाल दिया गया। डाक्टर, पुलिस, चुंगी की नावों के साथ साथ कुली और किराये की नावें भी जहाज़ के किनारे आ लगीं। यहां काफी मुसाफिर उतरे। सूत, कपड़ा मशीनरी (लोहे के स्प्रिंग) को उतारने में दो घंटे से ऊपर लग गया। सामान उतारने का काम क्रेन की सहायता से ईरानी लोग करते थे। यह सामान बड़ी बड़ी लकड़ी की नावों में उतारा जाता था।

छोटे छोटे बच्चे एक चोंगा पहने हुए थे। जो एड़ी तक पहुँचता था और कुरते पाजामे दोनों का काम देता था। ये लोग अंडा, खीरा और चिड़ियाँ बेंचते थे। बड़े लोग चोंगे के नीचे पाजामा और ऊपर से कोट पहने हुए थे। उनके सिर पर लाल या चारखाने का अंगोछा लिपटा हुआ था। कुली लोग नंगे पैर थे। उनके सिर पर फेल्ट की लेटी हुई

टोपी थी। उनके सिर पर छोटे बाल थे और कान से दो अंगुल ऊपर गोल मुड़े हुए थे।

अफसर लोग अंग्रेजी पोशाक में थे। चुंगी वाले हर एक उतरने वाले सामान का हिसाब रखते थे।

११½ बजे बसरा के मकान दिखाई देने लगे। यह शहर बिल्कुल नया है मकान दाहिने किनारे पर हैं। उनका रंग हलका पीला है।

१२ बजे जहाज़ किनारे पर लगा। चुंगी वालों की नाव पहले से ही पीछे लगी हुई थी। रेलवे इन्सपेक्टर, पासपोर्ट के अफसर और डाक्टर जहाज पर चढ़ आये। इनके साथ ही कुलियों की भीड़ भी आगई। पहले डाक्टर ने सब के (माता के) टीके और सर्टीफिकट देखे। जिन्होंने फर्जी सर्टीफिकट ले रक्खे थे उन्हें ३) फीस देकर जहाज़ के डाक्टर से टीके लगवाने पड़े। सबके पासपोर्ट ले लिये गये। इनकी जाँच में डेढ़ दो घंटा लग गया। पासपोर्ट जांचने वाले लोग नये मालूम होते थे। पासपोर्ट वापिस मिलने पर नीचे उतरा। सामान पहले ही से रेलवे इन्सपेक्टर रायबहादुर सुबराव साहब ने कस्टम्स (चुंगी) घर भिजवा दिया था। इन्होंने बड़ी सज्जनता दिखलाई। यहां दो फार्म भर कर दिये गये। सामान रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। मैं चार आना किराया देकर मोटर से बसरा शहर देखने चला आया। शहर लगभग ६ मील दूर है। यहां एक अमरीकन मिडिल स्कूल, दो बैङ्क, बाज़ार आदि हैं। एक सड़क अस्फाल्ट से कुटी है। दूसरी सड़कें भी काफी चौड़ी और पक्की हैं। नहर पर कई पुल हैं। एक हिन्दी बाजार है। नंगे पैर वाले कुली लड़कों की भीड़ काम के लिये आ घेरती है। पर एक के तय हो जाने पर बाकी चले जाते हैं। यहां शरबत की कई दुकानें हैं। एक छोटा पार्क है जिसमें अधिकतर कनैल के फूल हैं। पार्क में बहुत से बेकार फकीर और तमाशे वाले पड़े रहते हैं। खीरा सस्ता है। टमाटर ८ आने सेर है। उबली मटर और रोटी बेचने वाले बहुत हैं। मेवा भी बहुत है। सुराही कुछ सफेद रंग की है। अधिकतर सामान विदेशी हैं।

चौराहों पर पुलिस है। यहां दाहिनी ओर चलने (Keep to the right) का नियम है। कुली को १ आने देकर मोटर पर फिर सवार हुआ और ४ आने में स्टेशन पहुंच गया। इसका ड्राइवर तुर्क था। तुर्कों और अरबों में भीतरी वैमनस्य है। यह बड़ा सज्जन था जब उसे मालूम हुआ कि मैं डाकखाने जाना चाहता हूँ तो वह मुझे अपनी मोटर पर डाक घर के दरवाजे तक ले आया। यहां के क्लर्कों ने हिन्दुस्तानी पैसा लेने में आनाकानी की लेकिन पास ही होटल से मैंने एक रुपया देकर एक अठन्नी और ३७ फिल्स ले लिये। १० फिल्स यहां बहुत चलता है। पर रात को टिकट लेने में हिन्दुस्तानी नोट और रुपये से काम लिया गया। अंग्रेजी रुपये का अजब हाल है। जिस रुपये पर जार्ज पंचम की तस्वीर होती है वह इराकी रुपये के समान १६ आने या ७५ फिल्स का होता है। जिसमें एडवर्ड की मुहर होती है वह १४ आने में चलता है। लेकिन विक्टोरिया की तस्वीर वाला रुपया लेने में यहां के लोग इन्कार कर देते हैं।

[२]

बसरा से प्रस्थान

बसरा का स्टेशन बिल्कुल नया है। बड़ी लड़ाई के समय में इसका श्रीगणेश हुआ। फिर भी यहां मुसाफिरखाना आदि सभी कुछ हैं। इन दिनों यहाँ रात को काफी मच्छड़ तंग करते हैं। लेकिन रात को गरमी कुछ कम हो जाती है और सुहावना लगने लगता है। हिन्दुस्तानी को यहाँ एकदम परदेश नहीं मालूम होता है। हिन्दुस्तानियों के सिवा यहाँ के अरबी लोग भी टूटी फूटी हिन्दी बोल लेते हैं। अरबी पंडे तो बहुत अच्छी हिन्दी बोलते हैं। ये लोग खादिम या खुद्दाम कहलाते हैं। ये लोग फेज़ टोपी पहनते हैं और उसके ऊपर हरे अंगोछे लपेट लेते हैं। कुछ सफेद या सुनहरे गोटे की पट्टी बाँध लेते हैं। ये अपने यजमानों (भक्तों) की तलाश में दूर दूर पहुँचा करते हैं। इस बार इन्हें बहुत

से यजमान मिल गये। इस गाड़ी में गुजरात के बोहरा मुसलमान या भाई साहब भी थे। कुछ यहूदी और दूसरे हिन्दुस्तानी थे। गाड़ी छूटने के पहले प्रायः सभी ने नलों से सुराही भर कर रास्ते के लिये रख ली। रास्ते में पानी का कष्ट था। १० बजते ही गाड़ी चल दी। रेलवे इन्स्पेक्टर साहब ने न केवल मेरा अतिथि सत्कार किया वरन् गाड़ी के छूटने के समय तक बराबर ठहरे रहे।

इधर गाड़ी में बिल्कुल भीड़ न थी। खूब पैर फैला कर सोने की जगह रहती है। रात के सफर में बहुत कम स्टेशन पड़ते हैं। इनमें मुसाफिर उतरते तो हैं लेकिन चढ़ते बहुत कम हैं। इस ओर एकदम सुनसान और उजाड़ रेगिस्तान है। आबादी के निशान बहुत कम नजर आते हैं। यह विशाल और खुश्क मैदान नदी की लाई हुई मिट्टी से बना है। हवा के झोंकों के साथ अक्सर धूल उड़कर गाड़ी में भर जाती है। कान, नाक, मुंह, बिस्तर आदि सभी जगह धूल की बारीक तह नजर आती है। यह सारा मैदान एक दम समतल है। इसमें कंकड़, पत्थर या पहाड़ी का नाम नहीं है। यहां के लोग कच्ची ईंट के घर बनाते हैं और लकड़ी या सरकंडों से छा लेते हैं। वर्षा न होने से ये मकान काफी मजबूत रहते हैं। गरमी के समय इनके अन्दर काफी आराम मिलता है।

सवेरे लगभग ७ बजे गाड़ी उर जंकशन के नजदीक पहुँची। यहां का ऊंचा प्राचीन टीला कई मील की दूरी से ही दिखाई देने लगा था। उर जंकशन बहुत ही छोटा है। बड़ी लड़ाई के समय यहां फौजी कैम्प था। उन्हीं बचे बचाये कामचलाऊ सीधे सादे घरों में स्टेशन के नौकर लोग रहते हैं। अलग कोई गांव नहीं है। यहां से एक लाइन नसीरिया नगर को गई है जो दस मील की दूरी पर फरात नदी के किनारे बसा है। यहां के स्टेशनमास्टर एक हिन्दुस्तानी ईसाई थे। वे इलाहाबाद में रह चुके थे। यहीं एक पंजाबी मुसलमान, एक हिन्दू

और एक सिख साहब थे। पहले मैं समझता था कि स्टेट हाउस में रहना पड़ेगा। पर इन हिन्दुस्तानी भाइयों ने घर का सा आराम दिया।

सब से पहले भग्नावशेषों के देखने का निश्चय किया गया। यह स्थान स्टेशन से लगभग १ मील दूर है। पेड़ और हरियाली न होने के कारण सबेरे आठ बजे ही धूप असह्य हो जाती है। नमकीन मुलायम और कुछ काली और भूरी मिट्टी के प्रदेश में लाल जिग्गरत (जिकरत) या मन्दिर का बुर्ज बड़ा सुहावना लगता है।

१९२३ ई० में पेन्सिल्वेनिया (संयुक्त राष्ट्र अमरीका) विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी) और ब्रिटिश म्यूजियम के सदस्यों ने मिलकर खुदाई का काम आरम्भ किया। कुछ ही समय में उस विशाल दीवार का पता लगा जिसे यहां के प्राचीन राजा नबूकद नजर ने बनवाया था। बाहरी सिरे पर बन्दूक लेकर पहरेदार पहरा देते हैं। इन्होंने खुदाई के सब स्थानों को भली भाँति समझाया। चन्द्रदेव का मन्दिर, इब्राहीम का स्थान आदि यहाँ कई ऐतिहासिक चीजें हैं। कुछ लाल ईंटों पर यूनीफार्म अक्षर खुदे हुए हैं। इन खंडरातों का चक्कर लगाने से अबसे कई हजार वर्ष पहले की केल्डियन सभ्यता सामने खड़ी हो जाती है। बहुत पहले फारस की खाड़ी यहाँ तक फैली हुई थी। फरात नदी का मुहाना यहीं था। एक बड़ी नदी के मुहाने पर बसे हुए समृद्धशाली बन्दरगाह और बलवान राज की राजधानी (उर) की शोभा अपने गौरव काल में असंख्य दर्शकों को चकित करती रही होगी।

खुदाई का काम सरदी के दिनों में होता है। बहुत सी चीजें बराबर निकलती रहती हैं। टीले के ऊपर चढ़ने से कई मील दूर का दृश्य दिखाई देता है। यहाँ से १० मील दूर नसीरिया नगर नजर आता है। नहर और भेड़ों के गल्ले तो और भी पास मिलते हैं। टीले की कुछ ईंटें बहुत कमजोर पड़ गई हैं। कुछ अब भी काले सीमेन्ट से मजबूत जुड़ी हुई हैं।

यहां से लौट कर फिर स्टेशन पर आया। शाम के समय नहर की ओर टहलने गया। यह नहर बहुत उथली है। लेकिन इसी की बदौलत कुछ खेती हो जाती है और गल्लों की प्यास बुझती है। नहर और स्टेशन के बीच में केवल तीन चार फर्लाङ्ग का फासला है। लेकिन इस ओर लड़ाई के समय के कटीले तार, टूटे फूटे टीन के डिब्बे और शीशे के टुकड़े इतने अधिक हैं कि स्टेशन के लोग इधर आना पसन्द नहीं करते हैं।

एक दिन ठहरने के बाद दूसरे दिन सबेरे की गाड़ी से मैंने प्रस्थान किया। उर से आगे बढ़ने पर ज़मीन अच्छी मिलती है। नमकीन और ऊसर ज़मीन को छोड़ कर सब कहीं गेहूँ के खेत नहर के पानी से सींचे गये थे। इस समय उनमें गेहूँ कट रहे थे। खेत से घर गेहूँ के ले जाने का काम सिर पर या गधों की पीठ पर होता था। दांय सब कहीं गधों से चलाई जाती थी। अब स्टेशन पर सब कहीं मोटी बड़ी रोटी, अंडे, दही, खीर, चाय, सिगरट बेचने वाले मिलते थे। कहीं-कहीं कुछ और फल भी मिलते थे। दीवानिया हिला, हिंडिया जंकशन और मुहम्मदिया बड़ी स्टेशनें थीं। शाम को साढ़े छः बजे गाड़ी बगदाद (व्यस्ट) स्टेशन पर पहुँच गई। पांच आने में एक कुली इंडियन एसोसियेशन के लिये किया। यहां के सेक्रेटरी श्री नरायन चन्द गुसाईं और सुरेन्द्रनाथ श्री मन्साराम आदि आदि मेम्बरों ने बड़ा अच्छा स्वागत किया। सभी तरह का आराम था। सेक्रेटरी साहब का घर पुल के उस पार असली शहर बगदाद या बड़े बगदाद में था। पर शाम को लोग दजला नदी के इस पार सैर करने आते हैं। (माड-ब्रिज १९१८) लोहे की नावों से बना हुआ है। यह पुल हावड़ा के ऊपर पुल की तरह बड़ी नावों के निकलने के लिये खोल दिया जाता है। दूसरे पुराने जूना ब्रिज का भी यही हाल है। पुल से बगदाद का दृश्य बड़ा सुन्दर मालूम होता है।

यहां के लोगों ने अंग्रेज़ी पोशाक को बड़ी सफलता से अपनाया है। उनका रङ्ग भी अकसर अंग्रेजी रङ्ग से मिल जाता है। पर वे

अकसर एक छोटी माला भी जपते रहते हैं। बीच बीच में अरबी भेष की भी खिचड़ी है। देहाती और मजदूर लोग अकसर नङ्गे और अरबी भेष (पीला ढोगा, सिर ऊपर दुहरा तिकोना अंगोछा और अलगान) पहनते हैं। दिन में लोग गरमी से बचने के लिये सरदाब (तहखानों में रहते हैं। इनमें हवा तो अच्छी नहीं होती है। लेकिन ठंडा काफी रहता है।

मुहल्लों में नालियां नहीं हैं। पाखाना ढालदार होता है और नीचे के सुराख में बहा दिया जाता है। यही हाल घर में नहाने धोने और बरतन साफ करने के पानी का है। हर आँगन में एक गहरा सुराख होता है। इसी में सब कूड़ा कचड़ा बहा दिया जाता है। २१ को सवेरे की गाड़ी से करबला गया।

[३]

हिंडिया जंकशन में उतर कर हिंडिया जलागार देखने गया। यहाँ फरात Euphrates में १९१४ ई० में जलागार बन कर तयार हुआ। ऊपर पुल है जिसके ऊपर से रेलगाड़ी और मनुष्य जाते हैं। दोनों तरफ से एक एक बड़ी और एक एक छोटी नहर मिलती हैं। जाजिया नहर बायें किनारे से और यूसुफिया नहर दाहिने किनारे से निकलती है। हिला नहर थोड़ी दूर पर समाप्त हो जाती है। बड़ी नहरें नदी के समानान्तर चलती हैं। पास ही हसनाय का स्टेशन है। दोपहर को लौट कर करबला की गाड़ी पर सवार हुआ। लगभग पौन घंटे में स्टेशन पहुँच गया। यहां के स्टेशन मास्टर एक पञ्जाबी मुसलमान हैं। रेल में ही ताहिरहुसेन करेंसी साहब से भेंट हुई। इनके साथ तीन और हिन्दुस्तानी मुसलमान थे जो करबला और नजफ देखने आये थे। इन्हीं के साथ मैं भी हो लिया। लगभग एक घंटे में रेलगाड़ी करबला पहुँच गई। करबला रेगिस्तान के बीच में होने से बहुत गरम है। इसी से गलियाँ बहुत तङ्ग हैं। दो मंजिला घरों के छतों की दीवारें एक दूसरे से मिल

जाती हैं। कुछ चौड़ी गलियां दोनों ओर से छायी हुई हैं। इससे धूप नहीं आती है। गलियां बड़ी गन्दी हैं।

लेकिन यह नगर इस्लामी दुनियां में बहुत मशहूर है। अब से प्रायः १२०० वर्ष पहले पैगम्बर साहब के नाती हजरतहुसेन साहब को खलीफा बनाने के लिये निमन्त्रण भेजा गया। स्त्रियों, बच्चों और साथियों को ले कर वे अरब से चल दिये। जब हजरतहुसेन साहब कूफा के नजदीक पहुँचे तो कूफा के दगाबाज लोग उनके विरुद्ध हो गये। उनके पास इतनी फौज न थी कि वे कूफा को जीत सकें। इसलिये उन्होने पास ही करबला के मैदान में डेरा डाल दिया। उन्होंने आत्मसमर्पण करना ठीक न समझा। इसलिये लड़ाई की तैयारियां होने लगीं। मुहर्रम की दसवीं तारीख को उन्होंने खलीफा की फौज से मोर्चा लिया। हजरत हुसेन और उनके साथी इस बुरी तरह से घिर गये कि फरात नदी तक पहुँचने का रास्ता भी न बचा। स्त्रियां और बच्चे प्यास के मारे तड़पने लगे। हजरत हुसेन का एक भी साथी जिन्दा न बचा। इसी हत्याकाण्ड की यादगार में शिया लोग सब कहीं मुहर्रम मानते हैं। हजरत हुसेन और उनके ७२ साथी करबला में दफन हैं। इनके ऊपर आजकल आली शान मकबरा खड़ा है। इसका गुम्बद सुनहरा है। अन्दर की फर्श और दीवारों पर असंख्य धन व्यय हुआ है। विशाल अहाते के अन्दर जाने के लिये ७ बड़े बड़े दरवाजे हैं। भीतर की ओर हराम है। कुछ ही दूर पर हजरत अब्बास का मकबरा है। इसकी जियारत करने के लिये हर साल हजारों दीनदार मुसलमान आते हैं। वे तरह तरह की भेंट चढ़ाते हैं।

इन्हीं का दर्शन करने मैं भी गया। पर एक हिन्दू के लिये इस पाक मुकाम के अन्दर जाना एकदम मना है। इसके बाहर भी तङ्ग और गन्दी गलियों में घूमना खतरे से खाली नहीं है। लेकिन दीनदारों का विश्वास है कि यहां की हर एक गली और कूचे में बहिश्त घुसी हुई है।

मेरे साथ एक पंडा था। वह अपने इस्लामी यजमानों को जयारत-गाह के अन्दर ले जाता था और मुझे दरवाजे के पास छोड़ देता था। कुछ

ही देर में खूंख्वार अरबी लोगों की भीड़ मेरे चारों तरफ जमा हो जाती। मैं अरबी भाषा भी नहीं जानता था। मुझे डर होने लगता कि शायद ये दीनदार लोग मुझ काफिर की जान लेकर बहिश्त लूटने की कोशिश न करें। इनके अन्ध-विश्वास का एक नमूना जो मैंने यहां के पिल्ग्रिम प्रोटेक्टर के मुंह से सुना बड़ा मनोरञ्जक है। बंगाल प्रान्त के मुस्लिम मिनिस्टर साहब एक बार यहां तीर्थ करने आये। इन्होंने जूते तो बाहर उतार दिये लेकिन काले मोजे पहने रहे। बस फिर क्या था ? यहाँ की उजड्ड भीड़ डंडे और छुरी लेकर बढ़ने लगी। सरकारी इन्तजाम की इन्हें क्या परवाह। पिल्ग्रिम प्रोटेक्टर साहब इसका मतलब समझ गये। उन्होंने झट काले मोजे उतरवा दिये। इससे भारी दुर्घटना बच गई। नहीं तो मिनिस्टर साहब और सरकारी कर्मचारी सभी मारे जाते। बात यह थी कि ये लोग काले मोजों को जूता समझते थे जिससे उनकी जियारतगाह नापाक हो गई।

जहां ऐसा अन्धविश्वास और कट्टरपन हो वहां ईश्वर की ही असीम कृपा से मुझ सरीखा अकेला हिन्दू बचकर निकल सकता है। यहां की गलियां भी ऐसी अंधेरी और तङ्ग हैं कि दिन में भी कत्ल के मामले का पता न चले।

यहां वृक्षरहित रेगिस्तानी नगर में इतनी गरमी पड़ती है कि लोग सभी तरह से धूप से बचने की कोशिश करते हैं। गलियों के दोनों ओर मकान इस प्रकार बनाये गये हैं कि उनकी छतों के ऊपर टट्टर छा दिये जाते हैं जिससे गलियों में धूप नहीं आने पाती है। धूप के वक्त लोग मकानों के नीचे बने हुए तहखानों में रहते हैं। यहाँ ताजी हवा नहीं पहुँचती है। दोपहर को भी कुछ अंधेरा रहता है। कुछ गन्दगी भी रहती है। लेकिन यहाँ गरमी से बचत हो जाती है।

गलियों के दोनों ओर दुकानें हैं। किसी में आटा, दाल, चावल बिकता है। किसी में आसन, माला, ताबीज और काबा या जयारतगाह की मूर्ति बिकती है। जब लोग नमाज पढ़ते हैं तो इसी मूर्ति को सामने

रख लेते हैं। इनका विश्वास है कि ऐसा करने से अधिक सवाब होता है। कुछ दुकानों में गोश्त रहता है। इनमें किसी तरह का परदा नहीं होता है। जानवर को काटने का काम भी खुल्लमखुल्ला दुकान के सामने गली में होता रहता है। काले बुरकेवाली स्त्रियां और काले चोगा और लाल टोपी या सफेद पगड़ी पहने हुए मनुष्य इस ओर कुछ भी ध्यान नहीं देते हैं। यहां पर मक्खियाँ सब से अधिक होती हैं। किसी दुकान में छुहारे खजूर और दूसरे सूखे फल मिलते हैं कहीं मूली टमाटर और शाक भाजी रहती है। रोटी और मिठाई की दुकानों के आसपास बड़ी गन्दगी रहती है। कुछ दुकानों में विलायती कपड़ा रहता है। कुछ में चप्पल और जूते बिकते हैं। कहीं कालीनें रहती हैं। कहीं बरतन बिकते हैं। बीच बीच में एक दो दुकानों में कुरानशरीफ और दूसरी किताबों की बिक्री होती है।

शहर का चक्कर लगाने के बाद अपने अरबी पंडे के साथ एक हिन्दुस्तानी के घर आया। इनके बाप अवध के ताल्लुकेदार थे। वे यहां आकर बस गये। मुझे पता लगा कि यहां और भी कई हिन्दुस्तानी मुसलमान रहते हैं। जिस तरह से पुरानी चाल के हिन्दू अपने जीवन के अन्तिम दिन काशी में बिताना पसन्द करते हैं उसी तरह से दीनदार शिया मुसलमान यहां आकर मरना पसन्द करते हैं। जो दूसरी जगह मरते हैं वे भी अपनी कब्र यहीं बनवाते हैं। उनका विश्वास है कि पैग़म्बरों की कब्र से उनकी मिट्टी मिल जाने से उनका उद्धार हो जायगा।

यहां एक शिया स्कूल भी है पर पढ़ाई गुलिस्तां बोस्तां और कुरान की ही होती है। छोटे छोटे बच्चे भी मुल्ला लोगों की तरह पोशाक पहनते हैं। उन्हीं की तरह आचरण करना भी सीखते हैं। हिन्दुस्तानी बच्चे भी बहुत जल्द फारसी और अरबी बोलना सीख जाते हैं।

पानी की यहां बड़ी कठिनाई है। दूर से पानी आता है। उसके नीचे एक बड़ा बरतन रखा रहता है। यह प्रायः खाली ही रहता है। पीनेवाले इसी से लेकर पानी पीते हैं। बचा हुआ जूठा पानी

भी इसी में डाल देते हैं। मैंने नल से पानी लेने के लिये लोटा निकाला। लेकिन खुद्दाम (पंडा) कहने लगा कि पानी नापाक हो जायगा। वह अपने बरतन से पानी देने लगा। मैं उस बड़े बरतन के जूठे पानी पीने को तैयार न था। वह मेरे लोटे से एक बूंद भी बड़े बरतन में गिरते देख नापाक समझता था। अन्त में यह तय हुआ कि लोटा पूरा न भरा जाय और लोटे का एक बूंद पानी नीचे के बरतन में न गिरे। इस प्रकार यहां मैंने एक बार कुछ पानी पिया।

शाम के ६ बजे धूप कुछ कम हुई। यहां की घड़ियों में ११ बजे थे। बात यह है कि यहां के लोग सूर्योदय से दिन का आरम्भ मानते हैं। जब दोपहर होती है तब यहां की घड़ियों में छः बजते हैं और सूर्यास्त के समय १ बजते हैं। इस तरह अपनी घड़ी से लगभग साढ़े छः बजे और इनकी मजहबी घड़ी से ११ बजे एक मोटर द्वारा करबला से नजफ के लिये प्रस्थान किया। मेरे साथ एक सुन्नी अरबी पंडा और दो हिंदुस्तानी मुसलमान तीर्थयात्री थे।

यह रास्ता एक दम सुनसान था। जिस तरह जहाज के ऊपर से समुद्र में सब कहीं पानी ही नजर आता है उसी तरह यहां सब कहीं रेगिस्तान था। नजफ और करबला की यात्रा पहले ऊंटों से होती थी और कई दिन लग जाते थे आजकल यह यात्रा कुछ ही घंटों में समाप्त हो जाती है। करबला से बाहर आने पर काफी दूर तक कब्र थीं। फिर रास्ते का भी नाम न था। न कोई पेड़ या टीला ही था। मुझे आश्चर्य था कि मोटरवाला किस तरह नजफ पहुँचायेगा।

[४]

कुछ देर बाद एक छोटा गाँव मिला। यहां सब घर कच्ची मिट्टी के बने थे। इनकी छतें चपटी थीं। एक बड़े घर में पुलिस की चौकी थी। दूसरी ओर चाय की दुकान थी बाहर धूल के ऊपर खीरा, रोटी और दूसरी चीज़ें बेचने वाली औरतें बैठी हुई थीं। हमारे साथी चाय पीने बैठ गये।

मैंने कुछ खीरे मोल लिये। इनसे बड़ा काम चला। भूख और प्यास दोनों के लिये मैंने खीरों से काम लिया। अरबी लोगों का पानी पीना असम्भव था। ये सब लोग एक ही बरतन में मुंह लगाकर ही पानी पीते थे। अगर अन्त में कुछ पानी पीने से बच जाता तो वे उसे फिर बड़े बर्तन में डाल देते थे।

कुछ देर में मोटर चल दिया। गांव सीधे रास्ते पर न थे। फिर भी ड्राइवर लोग इनमें होकर ही जाना पसन्द करते थे। इससे कुछ चक्कर ज़रूर लग जाता था लेकिन मशीन बिगड़ने की हालत में बड़ा सहारा मिलता था। अगर निर्जन रेगिस्तान में धूप के समय गाड़ी बिगड़ जावे तो सबका एक तरह से मरन हो जाता है। दिन छिपते छिपते हम लोग नजफ पहुँच गये। हजरत अली का मकबरा और दूसरे नीले गुम्बद दूर से ही दिखाई देते हैं। नगर के बाहर कब्रों की भरमार है। यहां हजारों की तादाद में दुनिया भर के धनी मुसलमानों की लाशें हर साल दफन होने आती हैं। अपनी अपनी हैसियत के मुआफिक कब्रों के ऊपर छोटे बड़े मकबरे बने हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि लाश एक बड़े खँड में डाल दी जाती हैं जहां उन्हें पालतू या जंगली जानवर कुछ ही समय में चट कर जाते हैं। कुछ भी हो यदि यहां की जलवायु अत्यन्त खुश्क न हो तो इन लाशों की बदौलत ऐसी बीमारी फैले कि कोई न बचे। नफज के एक ओर उथला नाला है। अन्दर की गलियां करबला की तरह अत्यन्त तंग और गन्दी हैं। इन्हीं में होता हुआ मैं अपने अरबी पंडे के घर आया। उसने मुझे अपने घर की छत पर ठहराया। कुछ देर आराम करने के बाद सब लोग जयारत करने निकले।

नजफ की भीड़ और भी अधिक खूंख्वार थी। सफेद पहाड़ी और काले चोगे वाले मुल्ला लोग सभी तरफ से हज़रत अली के मकबरे की ओर आ रहे थे। यह आलीशान मकबरा कई सौ गज के घेरे में फैला हुआ है। इसके कई दरवाजे हैं। हर दरवाज़ों पर भक्तों की भीड़ थी। कहीं मुर्दे की लाश की ओर अजब तरह की आयतें पढ़ी जा रही थीं।

यहां भी मैं मकबरे के अन्दर नहीं गया। लेकिन बाहर ही मेरे बारे में तरह तरह के सवाल करने वाले लोग इकट्ठे हो जाते थे।

मेरा पंडा भीड़ बढ़ते देख देख दूसरे दरवाजे की ओर चल देता था। इस शहर में जीवन सचमुच संकट में था। कुछ समय पहले यहां के दीनदार लोगों ने एक यहूदी को दिन में ही समाप्त कर दिया था। वे अपने पाक शहर में काफिर का रहना सहन नहीं कर सकते हैं। किसी तरह हम लोग मकान पर वापिस लौट आये।

इसके बाद छत पर एक लम्बी चौड़ी कालीन बिछाई गई। सबके लिए चावल, गोश्त, दही, रोटी और चाय बारो बारो से परोसी गई। मैंने नम्रता-पूर्वक भोजन करने से इनकार कर दिया। इन लोगों से पहले ही मैंने कुछ खीरे खा लिये थे। मुझे इस बात की बड़ी फिकर थी कि बिना पानी रात कट जावे। इसीलिये मैंने भोजन नहीं किया और खीरों को भी छील कर खाया जिससे मेरे मुँह का पानी अधिक खर्च न हो। प्यास के कष्ट के साथ ही मुझे डर था कि कहीं मेरे ऊपर हमला न हो। मैं रात को एक किनारे पर चौकन्ना होकर सोया। ईश्वर की कृपा से किसी तरह की दुर्घटना नहीं हुई। दूसरे दिन एक बार जयारत करके चलने की तयारी हुई।

पर चलने के पहले भेंट की रस्म अदा की गई। पंडे का बुड्ढा बाप सफेद मलमली ढीला पाजामा, पीला रेशमी कोट, सुनहरे गोटेदार लाल तुर्की टोपी पहने हुये डंडे के सहारे ऊपर आया। सब अदब से खड़े हो गये। उसने सब को आशिर्वाद दिया और कुशल पूछी। फिर वह एक बड़ी तकिया की धोक लगाकर बैठ गया। उसने बड़े गर्व के साथ कहा :—"नजफ नगर भर में सुन्नी जमात का घर केवल यही है। शेष शिया हैं। जब मरहुम मुहम्मद अली साहब यहां आये थे तो वे इसी मकान में ठहरे थे। उसने इस्लाम धर्म और नजफ नगर की महिमा सुनाई। उसने कहा यहां आने वाले सभी मुसलमानों के पुराने गुनाह

एक दम खुल जाते हैं। कितने ही गैर मुसलमानों पर यहां इतना असर पड़ता है कि वे इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेते हैं। एक गैर मुसलिम पिछले साल यहां आया और अच्छा मुसलमान बन गया। आप इस्लाम को क्यों नहीं क़बूल कर लेते।' मैंने ईसाई मिशनरियों से तो एक आध बार ऐसी बातें सुनी थीं। लेकिन मुल्ला के मुँह से इस तरह की बातें अपने जीवन में पहली ही बार सुनी थी। मेरे सामने इतिहास का वह चित्र खड़ा हो गया जब मुस्लिम विजेता एक ओर कुरान शरीफ और दूसरी ओर नंगी तलवार लेकर लोगों को दिखलाते थे। मैं अपने मन में सोचने लगा कि हे ईश्वर क्या मुझे यह शरीर यहीं छोड़ना पड़ेगा और हज़रत अली की कब्र के पास ही मेरी भी क़ब्र बनेगी।

मेरी खामोशी से कट्टर बुड्ढे के चेहरे पर निराशा छा गई। लेकिन उसने बात बदल दी और कहा "जबरदस्ती नहीं"। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। सबों ने बुड्ढे को भेंट चढ़ाई। मैं तय न कर सका कि क्या दूँ। जब बाहर आये तो उसके अधेड़ लड़के ने मुझसे कहा आप कुछ भेंट दीजिये जिसे मैं अपने वालिद साहब के हाथ में रख सकूं। मैंने एक अठन्नी उसे दे दी।

फिर हम सब लोग एक मोटर पर सवार होकर कूफा की ओर चले। यहां एक बड़ी पुरानी मसजिद है। किसी समय में इसकी इज्जत काबा के समान होती थी और ईश्वर से डरने वाले मुसलमान लोग इसकी ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ते थे।

मस्जिद ऊँची जगह पर बनी है। नगर फरात नदी के किनारे नीची जगह पर बसा है। सड़क एकदम ढालू है। इस पर एक विचित्र घोड़ा-गाड़ी चलती है। जो ऊँटगाड़ी से मिलती जुलती है। मेरे साथी वज़ू करके मस्जिद में नमाज़ पढ़ने चले गये। मैं मोटर पर बैठा रहा। मुझे नमाज में शामिल न होते देख बहुत से लोगों ने मोटर को चारों तरफ से घेर लिया। वे कठिन अरबी बोलते थे। जिसे मैं बिल्कुल नहीं सम-

मता था। कुछ हठी भिखारी थे जो "अलहम्दोलिल्लह" पढ़ कर दखिणा मांगते थे।

बड़ी लड़ाई के समय में इधर हिन्दू और सिक्ख सिपाही रह चुके थे। इसलिये यहां के प्रायः सभी लोग "सत्श्री अकाल" और "राम रामजी" कह लेते थे। इतने में हमारे नमाजी साथी आ गये। और कूफा के उजड्ड भिखमंगों और गुंडों से पीछा छुटा। कूफा के लोग इस-लामी दुनिया में भी सरकशी के लिए मशहूर हैं। इन्हीं लोगों के पूर्वजों ने हजरत अली को धोखा दिया था। नदी का किनारा घरों से छिपा रहने पर भी दूर नहीं है। वहां बड़ी बड़ी नावें थीं। ये मुसाफिरों से भर जाने पर ही छूटती थीं। छोटी नावें एक दो मुसाफिर को ही लेकर चल देती थीं। लेकिन किराया दुगुना लेती थीं। बड़ी नाव के छूटने में देर होते देख मेरे अरबी पंडे ने मेरे लिये छोटी नाव तय कर दी। उससे विदा होने में मुझे ऐसा जान पड़ा मानों मैं अपने किसी सम्बन्धी से अलग हो रहा हूँ। उसे धन्यवाद देकर मैं नाव पर सवार हुआ और दूसरी ओर आया। नदी बढ़ी हुई थी और पानी मटीला था। पिछले २० घंटे मैंने बिना पानी के विताये थे। अब पानी को छानकर मैं डेढ़ लोटा पानी पी गया।

मैं यहीं अच्छी तरह समझ सका कि हजरत अली और उनके साथियों को बिना पानी के किस प्रकार की तकलीफ हुई होगी। पन्द्रह मिनट में इस किनारे आया। इधर कीचड़ थी। छुहारों के बगीचे तो थे लेकिन मकान बहुत कम थे जो थे वे कच्चे झोंपड़े थे। कूफा नगर के पक्के मकान दूसरी तरफ छूट गये। नाव से मोटर का अड्डा लगभग एक फर्लांग था। केवल रास्ता बतलाने के लिए एक अरबी ने एक आना ले लिया। तीन मोटर खाली खड़े थे। उनके ड्राइवर दुकान के सामने बैठे हुये चाय का हुक्का उड़ा रहे थे। उन्हें हिला स्टेशन की तरफ जाने की कोई चिन्ता न थी। मैंने भी एक कुरसी पर अपना सामान रख दिया। और दूसरी

कुरसी पर बैठ गया। ये लोग डाइरेक्टर मेथड से मुझे अरबी भाषा सिखाने लगे। पर चलने का कोई नाम नहीं लेता था। कच्ची चार दिवारी से घिरे हुये छुहारे के बगीचे में मैं शौच के लिये गया। फिर मैंने नहाने की तयारी की। नहाने की जगह एकदम गहरी थी। इधर के लोग तमाशा देख रहे थे कि मैं क्या करूंगा वे मेरे तैरने से तो खुश हुए लेकिन मेरी चोटी और जनेऊ को बड़े ध्यान से देख रहे थे। मैं झट पानी के बाहर आया पहले मैंने टोपी और कुरते को पहना। पीछे से धोती बदली। फिर एकान्त में जाकर मैंने संध्या की।

[५]

कई नावें उस पार से इधर आ चुकी थीं। मुसाफिर लोग चाय और हुक्के में लग जाते। चलने के लिये कोई कुछ न कहता। मैंने दो पैसे के खजूर लिये। वे इतने अधिक थे कि खूब खा लेने पर भी बच रहे। अन्त में मोटरों ने चलने की तयारी की, दो मोटरें चलीं। लेकिन कुछ दूर चलने पर दो के मुसाफिर एक में ठूस ठूस कर भर दिये गये। एक डेढ़ घंटे में फिर एक बड़ी नहर मिली। मोटर इधर रह गयी। हम लोग नाव पर सवार होकर दूसरे किनारे पर आये। यहां दूसरी मोटर तयार थी। इधर चाय की दुकान न थी। एक स्त्री काले घड़े और मैली नांद लिये हुए पत्तों की आग से मोटी रोटी पका रही थी कुछ लोगों ने यही रोटी खाई।

इसके आगे एक दो जगह पानी की नालियां मिलीं। ये नालियां बड़ी नहर से सींचने के लिये निकाली गई हैं। इन्हीं के पास बद्दू अरब अपने डेरे डालते हैं। एक जगह मोटर बिगड़ गई। कड़ी धूप में छाया कहीं न थी। प्यास बुझाने के लिये एक नाली के गढ़े का मटीला पानी सब लोगों ने पिया। मरम्मत में अधिक देरी न लगी। कुछ ही समय में हम लोग हिला नगर में पहुँच गये। यह नगर काफी ऊँचा नीचा और हरा भरा है। यही एक फौजी छावनी है। शहर के अधिकतर

मकान नहर के किनारे बने हुए हैं। शहर से स्टेशन जाने के लिये एक पुल द्वारा नहर को पार करना पड़ता है। रेलगाड़ी के आने में अभी कई घंटे थे। इसलिये एक रुपये में बेबिलान के लिये एक घोड़ागाड़ी की।

बेबिलान नगर की प्रथम बार नींव ४००० वर्ष पूर्व में पड़ी। ईसा से २१०० वर्ष पूर्व से ५३९ सन् तक बेबिलोनिया की राजधानी रहा। इस बीच में न मालूम इसने कितने राज्यों का उत्थान और पतन देखा। स्वयं भी यह नगर अनेक बार उजड़ा और बना। इसी से ६८९ वर्ष पूर्व सेनाशरीब (Sennacherib) राजा ने तत्कालीन सभ्यता और विद्या के केन्द्र बेबिलान नगर को समूल नष्ट करने में कोई कसर न छोड़ी। वह अपने ही शब्दों में अपनी डींग इस प्रकार मारता है :— "तूफान के समान मैं इस नगर पर टूट पड़ा। छत से लेकर नींव तक मैंने शहर और घरों को ढाह दिया और जला दिया। देवताओं की दीवार, खाईं, बुर्जियों और घरों की ईंटों को मैं ले गया। मैंने उन्हें अरहतू नहर में फेंकवा दिया जिससे आगे चल कर शहर के देवताओं और मन्दिरों का कोई नाम निशान न रहे।" इस प्रकार प्राचीन युग का एक शानदार शहर सदा के लिये नष्ट हो गया।

यहाँ खुदाई का काम सरदी के दिनों में होता है। यहाँ का बहुत सा पुराना बहुमूल्य सामान बगदाद के अजायबघर में मौजूद है। कुछ योरुप के दूसरे बड़े अजायबघरों में चला गया है।

मूर्तियां और सिक्के यहां के चौकीदारों और बद्दू लड़कों के हाथ भी बहुत लग जाते हैं। वे यात्रियों को बड़े सस्ते दाम में ये चीज़ें बेच देते हैं।

लेकिन इराक़ की सरकार ने इन पुरातत्व सम्बन्धी चीजों के लिये कड़े नियम बना दिये हैं। इनके बेचने के लिये बगदाद में कुछ दूकानों को लाइसन्स मिले हुये हैं। अजायबघर में भी ये चीजें बिकती हैं। दूसरी जगह से इन्हें मोल लेना या अजायबघर के क्यूरेटर की आज्ञा

लिये बिना बाहर ले जाने का नियम नहीं है। इसलिये जिन चीज़ों को मैंने बद्दू लड़कों से लिया था वे मुझे वहीं छोड़नी पड़ीं।

खँडहरों को देखकर मैं रेल की लाइन पर आया। यहीं बेबिलान है। यहाँ रेलगाड़ी एक ही मिनट के लिये ठहरती है। लेकिन टिकट-घर नहीं है। इसलिये मुसाफिर लोग बिना टिकट लिये हुए ही एक ऐसे डब्बे में चढ़ते हैं जिसमें टिकट जाँचने वाला इशारा करता है। रेल को आते देख मुझे बड़ी ख़ुशी हुई। बात यह थी कि यह हाल्ट (ठहरने की की जगह) एकदम वीरान जंगल में थी। यहाँ बद्दू लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी थी। बद्दू लोगों ने छोटी छोटी चीज़ें बेचकर मेरे रुपयों को भी देख लिया था। मैं चाहता था कि किसी तरह रेलगाड़ी आवे और इनसे पीछा छूटे। इनकी कोई कोई स्त्रियाँ टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोल लेती थीं। उनकी हँसी-मज़ाक की बातें सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। एक स्त्री हँसकर कहने लगी "बीबी नहीं माँगता है?" गाड़ी आते ही मैं एक डब्बे में सवार हो गया। कुछ बद्दू भी बड़ा बड़ा बोझा लेकर सवार हो गये। पर बहुत से लोग तमाशा देखने ही आये थे। बगदाद तक कुछ स्टेशन पड़े। इसी तरह के और भी कई स्थान मिले जहां गाड़ी सिर्फ ठहरती थी टिकट बांटने का कोई प्रबन्ध न था। पदाधिकारियों में मैंने सब जगह ईमानदारी देखी। बिना पढ़े-लिखे देहाती बद्दू लोगों से उन्होंने एक पैसा भी अधिक लेने की कोशिश नहीं की।

बगदाद की सैर

बगदाद को मेसोपोटामिया का दिल समझना चाहिए। इस शहर में लगभग तीन लाख मनुष्य रहते हैं। इस तरह सारे देश की $\frac{1}{10}$ आबादी इस अकेले शहर में रहती है। इराक़ का सबसे मूल्यवान भाग मेसोपोटामिया है। मेसोपोटामिया या द्वाबा के देश को दजला और फरात नदियों ने बनाया है। दजला नदी को प्राचीन सुमेरियन लोग इदिकला नाम से पुकारते थे। इसी को बिगाड़ कर फारसी लोग तिगरा,

यूनानी लोग टाइग्रीस और अरबी लोग दिजला कहने लगे। इसी तरह दूसरी बड़ी नदी का पुराना नाम पुरानुन या पुरा था। इसको फारसी लोग उफरात्, यूनानी लोग यूफ्रेटीज और अरबी लोग फरात नाम से पुकारने लगे।

विशाल दजला नदी के किनारे बगदाद और करख नाम के दो पुराने फारसी गांव थे। ७६२ ईस्वी में खलीफा मन्सूर ने यहीं बगदाद शहर की नींव डाली। नदी के दोनों किनारों पर वृत्ताकार शहर बसाया गया। शहर को बनाने का काम १ लाख कारीगर लगातार किया करते थे। लगभग १४ करोड़ रुपये शहर को बनाने में खर्च हुए। पुराना शहर तो ऐसा नष्ट हुआ कि उसका आजकल पता लगाना भी कठिन है। लोगों का अनुमान है कि जहां आजकल हवाई जहाज का स्टेशन है वहीं पुराना शहर बसा था।

फिर भी वर्तमान बगदाद में बहुत कुछ पुरानी बातें हैं। यहां की कुछ गलियों में यात्री सहज ही उन दिनों का अनुमान लगा सकता है जब हारून अलरशीद साहब भेष बदल कर अपनी प्रजा के सुख दुःख का पता लगाने के लिये इन गलियों में घूमते थे। पर आजकल बगदाद में पुरानी और नई चालों का एक अजब मेल है। यहां आप एक ओर हवाई जहाजों को उड़ते देखेंगे। दूसरी ओर कुछ लोग गधों पर चढ़े हुए घूमने में जरा भी न शरमायेंगे। कभी कभी तो इन गधों और घोड़ा गाड़ियों की भीड़ के कारण मोटरों के तेज चलने में बड़ी बाधा पड़ती है।

दजला नदी में भी आप एक ओर पुरानी चाल की गोल नावें या गुफा देखेंगे दूसरी ओर नई चाल की नावें मिलेंगी। पर दजला नदी से बगदाद शहर की बड़ी शोभा बढ़ गई है। इसके दोनों किनारों पर आली-शान मकान बने हैं। पर नदी के ठंडे पानी में बहुत कम लोग नहाते हैं इसलिये यहां नहाने के घाटों का नाम नहीं है। पर इसके प्रसिद्ध माउ पुल पर शहर भर के शौकीन लोग शाम को सैर करने निकलते हैं।

काफी-घरों में शाम को बेहद भीड़ रहती है। कुछ लोगों के लिए घर अच्छे नहीं हैं इसलिये वे अपने मित्रों को इन्हीं काफी-घरों में चाय पानी पिलाते हैं। कुछ लोग हुक्का पीते रहते हैं या ताश खेलते हैं।

शहर में आप नालियाँ न देखेंगे। यहां के लोग बचा-खुचा पानी डालने के लिये घर के बीच में एक बड़ा गढ़ा खोद लेते हैं। खुश्क जलवायु में पानी जल्द सूख जाता है।

बगदाद की मस्जिदों, मदरसों और बाजार को देखने में मैंने कई दिन लगाये। फिर मैंने यहां से दमश्क के लिये मोटर द्वारा प्रस्थान किया। मोटर कम्पनी का किराया एक नहीं है। कोई फी आदमी १० पौंड लेती है कोई दो ही पौंड लेती है। जिन हिन्दुस्तानी भाइयों के यहां मैं मेहमान था उन्होंने मेरे लिये एक अच्छी जगह पौने दो पौंड में ही तय करादी।

देश-दर्शन

प्रत्येक अङ्क में प्राय: निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे :—

१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन-सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद, त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्राय: निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा। इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे :—

भारतवर्ष—१—लंका, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, ६—उड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामिल, ९—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, १३—हैदराबाद, १४—गोआ, १५—बम्बई-महाराष्ट्र, १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, १९—सिन्ध, २०—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, २२—पटियाला, २३—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, २६—अजमेर, २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, ३३—रीवाँ, ३४—काश्मीर, ३५—नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, ३८—गढ़वाल, ३९—अवध, ४०—संयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४२—अंडमान, निकोबार, लका द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मंगोलिया, ६—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, ८—साइबेरिया, ९—रूसी तुर्किस्तान, १०—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, १२—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक, १६—अरब, १७—ईरान, १८—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—बोर्नियो, २२—फिलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़गानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयरलैंड, २—ब्रिटेन, ३—फ्रांस, ४—हालैंड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, ७—नार्वे ८—स्वीडन, ९—आइसलैंड, १०—फिनलैंड, ११—रूस, १२—यूक्रेन, १३—पोलैंड, १४—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लैटविया और एस्थोनिया,

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलैंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़ुवेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल)।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।